

छन्दरामायण

जिसमें

रामचरित अनेक प्रकारके छन्द सातकाण्डोंमें वर्णितहै

जिसको

सन्तसेवक महावीरदास मालवीय ब्राह्मण
स्थानकौंढ़ ज़िलामिरजापूरबासीने
रचना किया है

पण्डित रामसेवक बाजपेयी के प्रबन्ध से

पहली बार

लखनऊ 57

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
मार्च सन् १८९४ ई० ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ छन्दरामायणप्रारम्भः ॥

शोभनाछन्द ॥

सा सकल मंगल करनहर, ध्वान्तधो भव फन्द। बन्दिये गुरुनाम सादर, हरण सबदुख द्वन्द ॥ सुखद सुन्दर ज्ञान गृहश्री, गुरुचरण नखसूर। करत सहज प्रकाश जनउर, मोहतम करि दूर १ विपुल संशय नभग जाकर, वैनबाज समान। सुनत जनकर बुद्धि अबिचल, शुद्ध विदित पुरान ॥ शोक दुस्सह विपति भव रुज, जनन मरण अपार। गुरुचरण रज दिव्यभेषज, दलन भूरि विकार २ नयन मलकहँ सिद्ध अंजन, आँजते सुखहोइ। खुलत ज्ञान विराग दृगलखि, परत सद्गुण सोइ। अंजि चषन पराग सादर, विमल करि द्वौ नैन। कहब रघुवर सुयश निर्मल, हरत जो मद मैन ३॥

कच्छप दोहा ॥ बन्दों तुलसी के चरण, अभय होत जन शरण। ज्ञान भगति उतपति करण, मोह मूल हठि हरण ४॥

चन्द्रकला दुर्मिलछन्द ॥ अति सोहत श्याम सरोरुह से तनरूप अनूप छटा छहरैं। तुतुराइक भाषत हैं बतियाँ जननी सुनि आनँद मोद भरैं। सुत कोशल नाथ महा छबि धाम लखे मुनिहूँ चित चोरि करैं। अस बालक नौल बिहार सदा सु हिये मन मन्दिर में बिहरैं ५॥

घनाक्षरी ॥ लोहित ललित मृदु चरण सरोज चारु, पदज प्रभासमूह पूषण लजावसों। भीन अँगुली शरीर श्यामपै विशेष राजै, पेखि छबि काम कोटि लाजत सुभावसों ॥ कोशल नरेश शिशु सुखमा निकेत मातु उबटि नहवाइके दुलारैं भूरि भावसों । साजि पलका अनूप सादर सुताइ तापै, भूलन भुलाई बाल लाल अति चावसों ६ चौतनी सुभग शीश विविध जड़ाऊ जड़ी, सोहति अनूप कोर लगे शुभ्र गूखुरू । आनन मयंक छबिधाम बैन तोतरीन, उपमा समूह काम दीजे तबहूँहरू ॥ सुखमा निकेत अंग अंग अभिराम श्याम पदज मनो विपुल भानुको उदै शुरू। महाबीर प्रभु ज्यों किलकि ठुमुकत चलैं, बाजत मनोहर कृपाल पाय घूघुरू ७ ठुमुकि चलनिपर किलकि नटनिपर मृदु चितवनिपर सुमति पगीरहै। श्यामल बदनपर सुखमा सदन पर, छबि हलकनपर सुरुचि रँगीरहै। तोतरे वचनपर शिशु भूषणनपर, मंजुल पगनपर प्रीति उमगीरहै॥ नूपुर की धुनिपर माधुरी हँसनिपर, रघुकुल मणिपर लगन लगीरहै ८ कौशिक मुनीश संग सुखमा अनूप अंग, बदन मयंक कामकोटि मनहारी हैं। यज्ञ रखवारी करि ताड़का सँहारी राह, गौतमी उधारी ये युगल बल भारी हैं। श्याम तनसो हैं सखी गोरे त्यों अनुज साथ, करत सनाथ लोग पुर पगुधारी हैं । मोहिनी डारि मोहे सकल नर नारि तेई फूललेन आये मनो फूल धनुधारी हैं ९ ॥

चन्द्रकला दुर्मिलछन्द ॥ नरनारिसबै मिथिलापुरके बिथ-

के लखि रूप अनूप सही। छबि संकुलदै अभिरामहिये जिहिकाम समूह छटानिबही॥ अतिअंग मनोहर राज कुमार उभौ सुखमा नहिंजाय कही। तनश्याम लसै पट पीत महाघनमें जनुदामिनि कौंधिरही १०॥

घनाक्षरी॥ सुन्दर अनूपछबि धामराम अभिराम, एक एक अंगपै अनंग कोटि वारिये। भायप भलाई भूरि कहिन सकैंगे शंभु, समन तिलोक कोऊउरमें बिचारि-ये॥ चाप शरपानि कंजभंजन निशाचरालि, धन्य पुन्य पुंज इन्हैं देखि हम भारिये। महाबीर शिवजू दयाल होइँ याही बिधि, आँखिन के ओट इन्हैं पललौं न टारिये ११॥

छप्पै॥ हलित भूमि उच्छलित सिंधु दलमलित शेष फन। लजित भूपसब चलित मेरु चकपकितदेवगन॥ चौंकि भानुरथ बाजिभजे मारगतजि ब्याकुल। भुवमं-डल सुरलोक सकल शोचत भय आकुल। उपजोशब्द महान तब त्रिभुवन अति खरभरपरो। महाबीर रघुवंश मणि जबहिं शंभु धनुकर धरो १२ दंभिन्ह नृपमद गये कठिन शंकरधनु टूटत। जनक नगर नरनारि मुदित लोयन फललूटत॥ सुरगण संकुल ब्योमकहत जैजै रघुकुलमणि। त्रिभुवन अति आनंद सकियकिमि एक बदनभणि॥ समयजानि नृप कुलगुरू सतानंदआयसु कियो। महाबीर जयमाल सियरामचन्द्र मेलोहियो १३॥

मत्तगयंद छंद॥ औधपुरी मुद मंगलखानि सबै नरनारि पुनीत सदा हैं। रामसनेह सुधा रसभृंग छके दिनरैन निरंतर आहैं। देखि कुमार सशक्ति सने सुखपुंजसुभा-

गहि देवसराहैं । नीच बिभव बिबुधेश लखे अभिलाष बड़ो मिलिबो उरचाहैं १४ ॥

इतिश्रीछंदरामायणेमहाबीरदासबिरचिते
बालकांड सम्पूर्णम् ॥

अथ अयोध्याकांड प्रारम्भः ॥

घनाक्षरी ॥ चाप शरपानि श्याम गौर अभिराम राम, लषण ललित अतिभारी भुजबलके । बिशद बिस्तार कर भंजन बिकार शुचि, सज्जन पियार उरशाल खल दलके । सखीहौ कुमारमार प्राज्यमद हारछबि, सुन्दर सुभाय हर मृदुता कमलके । पैदल चलत तेई कठिन अवनिजाके, जातगड़िपांयन बिछौनामखमलके १।१५॥

कच्छपदोहा ॥ निरखि देवसरि मुदित मन, करुणा सिंधु सुजान । कहत परस्पर अनुज प्रभु महिमा गंग महान २ । १६ ॥

घनाक्षरी ॥ कैधौं मुक्ति देहधरे शोभा सरसाइ रही, कैधों सुरलोककी निसेनी दरशाति है । कैधों अघओघनकी अंतक बिराजित है, कैधों आनंद प्रपुंज कामद बिभाति है ॥ कैधों यमदूतन्हकी कालसी कराल रूप, कैधों सब सिद्धिनकी दायनी सुहाति है । महाबीर कैधों प्रभुभक्तिकी प्रवाह गंग कैधौं सुर संतनकी सर्वस लखातिहै ३ । १७ सेवैंदेव सिद्ध आदि महिमा अपार जासु, अर्थ धर्म काम मोक्ष चारो फलदाईहै । कलुष बिभंजनि सुसंत वृन्द रंजनि बिकार जूह गंजनि पुरा-

ण बेद गाईहै। एक एक रेणु कोटिदेव वृक्षतें विशेष सकुचैं कहत शेष जेती प्रभुताईहै। महाबीर गंग की तरंग देखि भंग होत दारिद दुसह दोष पाप समुदाई है ४। १८॥

मत्तगयंदछंद॥ पाहनलौं तृन नार नदी सरसंकुल जीव चराचर जेते। धन्य जहां सियराम निवास महामुनि जे गुनगावत तेते। विंधिहिये अति मोद बिचारि सुभाग सुभाय बड़ाइ लहेते। तापस देव सुखी अतिशै श्रमको फल साधन सिद्धभयेते ५। १६॥

इतिश्रीछंदरामायणेमहावीरदासविरचिते
अयोध्याकांडसम्पूर्णम्॥

अथ आरण्यकांडप्रारम्भः॥

मत्तगयंद छन्द॥ भूरि निहारुहिभानु छपैं अरु चंदअदृश्य अमावस आये। लाजनि लज्जनमाहिंदुरैंसदग्रंथप खंडविवादबढ़ाये। सूर बिलोकि छपैं नरकादर त्यों अविवेकहि ज्ञान दुराये। पाइ सँयोग छपैं सबही इक चंचलनारि छपैं न छपाये १। २०॥

चकोरछंद॥ पंचबटी सियबंधु समेत विराजत राममहा छबि धाम। तीर नदी शुचि पर्णकुटीर रचे सुरदोउ सुभाय ललाम। रावण संग कुरंग छली छलकै खल सीय हरी मतिबाम। खोजत ब्याकुल अंग सनेह चले प्रभु यद्यपि ईश अकाम २। २१॥

इतिश्रीछंदरामायणेमहावीरदासविरचिते
आरण्यकांडसम्पूर्णम्॥

अथ किष्किंधाकांड प्रारम्भः॥

घनाक्षरी॥ श्याम तन कंज गुणधाम राम विश्वपति
सानुज निवास किये तीर सरपंपाके। बलकल चैलचा-
रुकसे कटि माथ हाथ बानधनु वेग गति तड़ित तड़ं-
पाके। भृंग बहुरंग मित्र विरही लषणमार अमेबाटिका
समूह राह अनुकंपाके। शंकर स्वरूप ताहि नाशक बि-
लोकि शोक,याहीसों भ्रमरढिगजातनहीं चंपाके १।२२॥

बरवाछंद॥ कपि सुकंठ भयभीत निपट दिन राति।
बालि त्रास दुख दुसह सहत बहुभांति २।२३ अभै
बालि हति कियउ मित्र पददेइ। भेजी कपि गन सिय
सुधि आवहु लेइ ३।२४॥

इतिश्रीछंदरामायणेमहावीरदासविरचितं
किष्किन्धाकांडसम्पूर्णम्॥

अथ सुंदरकांडप्रारंभः॥

सिखयाछंद॥ रीछपती के बैन सुनतश्री, हनूमान अस
भाषे। तातकहौ सो करौं बेगिही, रामचरण उरराषे॥
कहिय सुमेर समूल उखाड़ों, लैसबरी भूधाऊं। मसकों
भूमि रसातल भेजों अहिपति फनदरकाऊं१।२५रावण
मानमर्दि दलिमलि अपि, यमके भवनपठाऊँ। लंक
उपारिडारि सागर में, जनकसुता कहँ लाऊँ॥ कौतुक
अद्भुत जौनकरों अस, हरिजन तौन कहाऊँ। महाबीर
इमिबैन सुनत कपि, हरषत पुलक अघाऊँ २।२६॥

अनुफलछंद ॥ जामवंत तबबोले। मंत्रसुपरम अमोले। केवल सिय सुधि ताता। लैआवहु हरषाता ३ तब कपि दलयुत रामा। चढ़िकरिहैं संग्रामा॥ निशिचरबंशनशैहैं। जनक सुतहि लैजैहैं ४ सेवक धर्म महाना। है इतनो बलवाना॥ आज्ञाशिरपैधारैं। करितेही अनुसारैं५।२६॥

मधुभार छंद॥ हनुमंतबीर। शिखसुनतधीर॥ रघुबर कृपाल। महिमा बिशाल ६ मनमहँ सँभार। करिबार बार॥ तरके सुजान। हरिशिर समान ७ जनुरविप्रकाश। नभतन विभाश॥ सबदेव निरष। मनमाहँहरष ८।३२॥

छबि छंद॥ खुलि है सुभाग। हमरो अदाग॥ जिहिहौं कलेश। शंकित हमेश ९।३३ दलिहैं सुजान। मम दुख निदान॥ रावणगरूर। भंजिहिजरूर १०।३४॥

घनाक्षरी॥ मानो मेरु पक्ष युत गगन लखात वातजात अति सोहत प्रचंड बलभार है। चरण बटोरि सब अंग बीच मोरि चले राम बाण सो अमोघ अंजनीकुमार है॥ सिंहिका निपातिदै अघात यम धाम भेजि सुरसा ढकेलि पेलि विक्रम अपारहै। महाबीर बार बार हृदय सँभार पद कोशलेश वेगि बीर गयो सिंधु पार है ११।३५॥

चकोर छंद॥ पार गयो बलवान महाकपि श्री हरिजू पद पंकज ध्याइ। राम प्रताप सँभार हिये अति बारहिं बार सप्रेम सुभाइ॥ कानन भूरि लगे लखिसुंदर गुंजत पुंज अली समुदाइ॥ हर्षिचले तिहि भीतर बीर अशंक हिये रघुबीर मनाइ १२।३६॥

घनाक्षरी॥ देखिबन बाग अनुराग केशरी किशोर चढ़े

धाइ भूधर उतंग आसमानसों। रावण नगर अवलोकत विविध भट गाजत बाजत पुर त्रिपुल निशानसों॥ हेमको अगार सब हाटक रचित द्वार कनक केवार बने सुदृढ़बिधान सों। महाबीर रक्षक अनेकभट चहूँ ओर पहरि मनो कराल कालके समान सों १३। ३७॥

रोला छंद॥ शमन जहाँ कुतवाल लंकपुर चहुँ दिशि डोलै। पवन गवन गमि नहीं अपर का दुस्तरबोलै॥ तहँ प्रविशत हनुमान महाबल विक्रम भारी। सुमिरि राम पद कंज शंक विनु रिपु मद हारी १४। ३८ नाम लंकिनी लंक नारि सन्मुख ह्वै धाई। कहाँ चले रे चोर बचै नहिं मैं तोहिं खाई॥ घूमि हने कपि मूठ गिरी अवनीतल व्याकुल। शोणित मुखते श्रवत उठी संभ्रम भय आकुल १५। ३९॥

शोभना छंद॥ पाय परिकर जोरि ठाढ़ी कीन्हि विनय अपार। पूर्व सकल प्रसंग भाषत सुने पवन कुमार॥ जाहु निर्भय लंक भीतर काज करहु विशेखि। आजु धन्य सुभाग हमरो दरश तुमरो देखि १६। ४०॥

कामरूप छंद॥ तुम राम किंकर विजय यश लहि जाव रघुवर पास। हने घाव कठोर मोतन लख्यौं तेज प्रकाश॥ हम जानि नीके लंक के नहिं वीर पैहैं पार। तुम सकहु जीति तिलोक भट यह कौनबड़ोबिचार १७।४१॥

सुगत छंद॥ लंकिनि गई। हर्षितभई॥ रामहिं सुमिरि। चलिभे बहुरि १८ उरमें गुनत। कपिपद धरत॥ कवनी यतन। कीजे अटन १९। ४३॥

बरवा छंद॥ अति लघुवानर तन धरि पवन कुमार।

हेरत चहुँ दिशि सिय कपि लंक मँझार २० रावण
भवन लखे नहिं सुता विदेह। तरकि कढ़े पुनि बाहिर
हृदय सँदेह २१ देखत विविध सुभट बल बाहु बि-
शाल। हय गय संकुल सदन सदा सब काल २२ पग
पग जोह लिये पुर सूनु समीर। मिलै न जनक कुँवरि
उर होत अधीर २३। ४७ ॥

घनाक्षरी ॥ एक शत छब्बिस सहस अरु षट पंच यो
जन लमान चउड़ान लखि लंक है। कनक मई मकान
रचना विविध भाँति गगन छुवत शत योजन अतंक है॥
महाबीर भूरि भट पहर परत अति कहर मनहूँ यम
काल जाल बंक हैं। खोजत जनकजा पवन पूत ताहि
बीच निधड़क बीर मन सहज अशंक है २४। ४८ ॥

माया छंद ॥ देखे हैं रामायुध सोहै अति नीको। बोले
मीठो बैन सुनाये यश पीको ॥ धाये आये वेगि विलो-
क्यो हनुमाना। कोहौ कैसे ठाढ़ कहो क्यों इत आना २५
हौं हैं सीतानाथ पठायो इत आये। खोजें चाहैं सीय
सुने निश्चर लाये॥ चीन्हे श्री राघवजन हर्षे तनवारी।
भूमें दंडाकार परे आरत भारी २६। ५० ॥

छप्पै ॥ तुरत कपीश उठाय विभीषण हृदय लगायो।
रामभक्त सुठिजानि ज्ञान बहुभाँति सिखायो। कहहुतात
रघुबीर कबहुँ सुधिलेहैं मेरी। कह गद गद स्वरबैन दीन
ता कपि बरहेरी। तुमहौ प्रिय श्रीराम कहँ अवशिशरण
ले हैं सही। महाबीर धीरज धरहु सिय हित इत अइहैं
जहीं २७। ५१ अब मोहिं सीय शोध तात अतिवेगि बता
इय। बिनु कीन्हे प्रभु काज न एकौ मोहिं सोहाइय।

कहीविभीषण राह ठाउँ कपि सुनि हरषाने। चले सुमिरि भगवंत बिटप ढिग जब नियराने ॥ लखी सीय तन खिन्न अति चहुँ दिशि बहु राक्षसि खरी। महाबीरलघु रूप ह्वै चढ़े बृक्षपल्लवदुरी २८। ५२॥

रोला छंद॥ तिहि निशि सोवत स्वप्न दशानन अद्भुत देखा। जनु कोउ रघुबर दूत बलीमुख आइविशेखा॥ दुरा बृक्ष पल्लवनि भेंट चह जनक सुताको। अवशि दलिहिदल दनुज महाबल पौरुष बाँको २९। ५३ जागिउठा अकुलायहृदयअति बिस्मय कीन्हा। कोजानै यह स्वप्न सत्यहोवै चित लीन्हा॥ होइ कदाचित सांच अवशि चलि सियहि दुखैहैं। जो सबबानर देखि जाइ अपिहरिहिसुनैहैं ३०। ५४ गयो बहुत दिनबीति राम बल्लभा लिआये। अजहुँन हरिआगमन निपट धोंक्यों विसराये॥ जिहि सबेग दलसाजि लंकमहँ रघुबरऐहैं। सुफल मनोरथकरों सुयशजन तिहुंपुर गैहैं ३१। ५५ मुक्ति हेतु अस कियों यदपि जौ नाहिं सुधिलीन्हा। तौ मोसम विधि अधम जगतमहँ अपर न कीन्हा॥ अस विचारि मयसुता आदि महिषी सँगलाया। करि बनाव बहुभाँति जनक तनुजाढिग आया ३२।५६ कृशशरीर तपरूप देखिकह निशिचर नायक। सुनहि सीय मम बचनै मानुहित मत सुखदायक॥ तजहि शोक संदेह बिरहतापस बिनु बलकी। तव सनेह कहँ साँच तासु रतिहै अति छलकी ३३। ५७ जौहोती दृढ़प्रीति खबरि लेतेतौ तेरी। जानु अलीक बिलोकहियेका कहौं घनेरी॥ जौ देखो ममओर सौंह दृगकरि तूँ बामा। तौ भोगै पुर

लंकराज स्वच्छन्द ललामा ३४।५८ में सेवक सबभाँति शप्तकरि कहत घनेरी। सुन्दरि सब रनिवास होइहैं अनुचरि तेरी॥ सुनि अतिशय मनमलिन सीयभइ निपट दुखारी। सुमिरि अवध पति चरण पराक्रम भूरि सँभारी ३५।५९॥ लै तृणकर करिओट कहति सुनुशठ अभिमानी। बोलै बचन बिचारि अधम मतिमंद गुमानी॥ सिंहभाग गोमायु चहै जिमि तव अनुमाना। भूलिगयो बढ़िकहत निलजहरि बाणमहाना ३६।६०॥

उल्लालाछंद॥ सुनि दशमुख बचपरुष अति खीझि हृदय क्रोधितमहा। चलाहतन करबाललै मंदोदरि तब पदगहा ३७।६१ नीति बिरुद्ध जुबाल बध यह बिचार नहिं लीजिये। और करहु ततबीर कछु जिहि सीतहि बशकीजिये ३८।६२॥

चकोर छंद॥ कोपिकहै दशभाल निशाचरि भूरिबुलाइ सियै डरपाउ। जौंकहुंद्वै पखमें सिय मोर कहा न कियो तबदों सतिभाउ॥ जानहि आपुहि कालकलेउ बचै किमि तूं सबताहि बुझाउ। श्रीहनुमान सुने अतिशय दुखबारहि बारहिये पछिताउ ३९।६३॥

अनुफलछंद॥ सूनु समीर दुखीतर। तबसंकल्प कियेउर। भानु उदय जों पावों। तौ यहदावँ चुकावों ४० धिग ममपौरुष आही। जौ नहिं लेउँ निवाही॥ यहि बिधि पवन कुमारा। उरमहँ करत बिचारा ४१।६५॥

चौबोलाछंद॥ रावण खल जब मंदिरगयो। निशाचरि सियहि बहुभय दियो॥ अतिबेष कराल बनाइके। जानकी ढिगगईं धाइके ४२।६६॥

तोमरछंद ॥ त्रिजटा कहा समुझाइ । बहुभाँति भेद सुनाइ । सब सुनहुँ निशिचरि वृन्द ॥ सेवहु सियहि सुख कन्द ४३ थोरहि दिवस महँराम । सजिकीश दलबल धाम । चढ़िलंक पर उरकोपि । चयदुष्ट दलिहैं सोपि ४४ करि सकल विधि सुरकाज । देहैं विभीषण राज ॥ रावण दशहु मुख तोरि । सिय लहब हरि मिति थोरि ४५ सुनि तासु बच फुरमानि । गिरिचरण सबअकुलानि ॥ पदबंदि बारहिं बार । गृह चलीं करत बिचार ४६ त्रिजटा बैन सति जानि ॥ सेवहु सियहि हित मानि । नत दुःख अति परिणाम ॥ सुनु हमहिं लहब निकाम ४७ ते गईं जब निज ऐन । बोलीं जनकजाबैन ॥ सुनुमातु विनय अपार । फुर करहि प्रीति उदार ४८ ज्यों तजों तन अनयास ॥ सो जुगुति वेगि प्रकाश । ब्रहु विनय पद गहि कीन्ह ॥ धीरज विविध बिधि दीन्ह ४९ गवनी चरण शिरनाइ । सिय दुखित हृदय अघाइ ॥ उर विरह दव अति जागि । प्रगटी मनहुँ तन आगि ५० लोचन सुरक्षक दास । सींचत दरश की आश ॥ विनवत निशाकर देखि । पुनि कहत तरुहि विशेखि ५१ फुर नाम करु दै आगि । जिहि तजों तन हरि लागि ॥ यह दुसहदुख सहिजात । किमि श्रवहि अनलनशात ५२ । ७६ ॥

पद्मावती छंद ॥ अंजनी कुमारा हृदय विचारा सुमिरि चरण पंकज हरिको । तब भूमि गिराये जो लै आये सहिदानी हरि मूँदरिको ॥ प्रमुदित उठि लीन्ही जब तिहि चीन्ही हर्ष शोक अति उर माहीं ॥ कवनी बिधि

आई तजिरघुराईतुहूँ वियोग दुखितआही ५३। ७७
ऐसो कोश्रीरा जोरघुवीरा जीति सकै तिहुँ लोक सही। करितर्क अनेका थिति नहिं एका लखि मंजुल कपि बैन कही॥ यह रघुबर दीन्हा ममकर चीन्हा आप खोज हित इत आये। हरि गुण गण गाथा तब कपिनाथा विविध भांति सादर गाये ५४। ७८॥
ताटंक छंद॥ को हो तात कहाँ से आये अति प्रिय बैन सुनावत हौ। दुरे दुरे यह भाषत कैसो सोहँ न क्यों चलि आवत हौ॥ सुनि सन्मुख हनुमान खड़े लखि विस्मय भूरि हृदय कीन्हा। शपथ करी कपि रामचन्द्र को नाथ दूत सीता चीन्हा ५५। ७९॥
उपमान छंद॥ भई परतीति सांच यह रघुवरको दूता। बोलीं अधिक सनेह युत कपि सन तब सीता॥ कहो तात क्यों हरिजू मोको विसराये। चित भयो है निठुर कौश बिरद कहुँ बहाये ५६। ८०॥
सारछंद॥ बीति गयो बहु काल तात नहिं दीन बंधु सुधि लीन्हा। बड़ अपराध भयो कछु मोते ताते सुरति न कीन्हा। अब तो मास दिवस दश कंधर बीते प्राण नशैहैं। जानि परत दृढ़ ऐसो कपि वर जौ नहिं रघुवर ऐहैं ५७। ८१॥
भुजंगप्रयात छन्द॥ सुनैमातुसांचीकहौंतोहिबानी। कृपा कन्दश्रीरामकारुण्यखानी॥ नितैहैं तिहारे बिनाशोक छाये। भईदेरजौलौंनशोधानिपाये ५८। ८२॥
मत्तगयंद छंद॥ मोहिं सँदेश कहे रघुनंदन भाषत सो जननी अनुमानो। ताल सरोजनि कुंत भयो तरुछाँह

कृशानु मनो अधिकाना ॥ ऐ प्रिय तोर वियोग कथा न कहे चुकि है मनही मन जानो । प्रीति यथा तुम्हरे हमरे पर तौलि गुनो सम सो परिमानो ५९ । ८३ ॥

सिख्या छंद ॥ जो पै अबलौं खोज मातु कहुँ रघुबरहोते पाये । तौ करते कि बिलम्ब नेकहू बल निधि सदय सुभाये॥ तुम अपराध योग हौ जननी यह सुनिमन सकुचावे । जिहि पर कृपा निरंतर हरिकी देह दशा विसरावे ६० तोरे बिछुरत रामचन्द्रको कृशशरीर अतिमाता । मुँदरी करकी कंकण ह्वैगै अपर कहौं का बाता ॥ अब प्रभु संभ्रम कपि भालुन सँग ऐहैं लंक खरारी । दलिहैं रावण सकुल धीरधरु संततजन हितकारी ६१।८५॥

नीलचक्र छंद॥ हैं जु कीश तोहिं सों समूह रामचन्द्रधारि में यहाँ बड़े बली निशाचरालि दक्ष । पार पाइबेक छोभ होत मोहिंये समीर सूनु ज्यों सुने स्वदेह कीन्हहै प्रत्यक्ष ॥ तेज को निधान वीर धीर मेरु शैल आदि ईश से बिलोकि हर्ष सीय हीय माहुँ। मातु राम के प्रताप काल को सँहारिहौं कहा विचार बापुरो अशक्त वीस बाँहु ६२। ८६ ॥

कच्छप दोहा॥ सुयश पराक्रम रामको सुनि उर अधिक अनन्दि । हरष सहित हनुमान कपि बोले सिय पद बन्दि ६३। ८७॥

पयो धर दोहा॥ लगी क्षुधा हैमातुअति सुंदर शुचिफल देखि ।देहुनियोगप्रसन्नमनकौतुककरोंविशेखि६४।८८॥

शशोछंद॥ सुनीहै जुबानी । मनै हर्षमानी ६५ बदैबैन माता । कपीशै सुहाता ६६।९० ॥

छबि छंद॥ हरिपद सुप्रीत। उर ह्वै पुनीत॥ निर्मल सुदास। प्रभुपद सुपास ६७ सब गुण समेत। अति बल निकेत॥ योधा अखंड। विक्रम प्रचंड ६८ रघुवर कृपाहिं। ह्वै हौ सदाहिं॥ यहि विधि कपीश। कहँ दै अशीश ६९। ६३॥

पंक्ति छंद॥ आशिष दै के। आयसुमाता॥ दीन्हि अभैखावो फल ताता ७०। ६४॥

कच्छप दोहा॥ सुचि मधु फल रस रूप लखि खाहु पैठिसुतबाग। सर्बसुमंगलताहिकहुँ जिहिहरिपदअनु-राग ७१ ६५॥

घनाक्षरी॥ परमपुलक बीचहनुमान सोहियत सीय अनूकुलअति आपुपरजानिके। आशिषअमोघ हरि चरण सनेहसुनि मुदितकपीश कृत कृत्यअनुमानिके॥ शीशनाइ सादर चरण जगदम्बिकाके गये कूदि बाग में सवेग ओट फानिके। महाबीर हटकत रक्षकनिहने हांकि जाइतेकहे समाजदेव दुख दानिके ७२।६६ सुनि अति कोपि दशकन्धर सुभट दशकोटि बलवानजे सुरेश मदहरहीं। प्रेरेउ चले समूहकर करबालगहिकूदि करि कला नट नायक निदरहीं। तोमर तुपकतीर तीक्षण त्रिशूल शेल दमक निशाचर कठोर रवभरहीं। महा-बीर बागढिग आइखल धारि नाग कूदे हनुमान बैनतेय बिनु डरहीं ७३। ६७॥

मच्छदोहा॥ दले सपदि राक्षस कटक बलानिधि पवन कुमार।गये पुकारत अधमरेकछुदश मुखदरबार७४।६८

सुन्दरीछंद॥ सुनिकै दशकंधर सेनप पांच पठावतभो

बलबाहु बिशाला। लखिके हनुमान महा बलवान किये घमसान दले सब माला॥ कछुजे तिनमें भगि घायल बीरगये भयभीत सभादशभाला। कहते करजोरि सुनो प्रभुहै नहिंकीश गुनोभट काल कराला ७५।९९॥ तबतो अति कोप कियो दशमाथ नियोग दियो बहुबीर प्रचारे। सबजाइ हनोकपि बेगिउठे सुत मंत्रिनके दलसात सँवारे॥ सब कज्जलशैल समान सजीव भयंकर बेषमहा तनकारे। धरणी दलकैचलते तिनके गिरिमेरुहलै सुर चौंकि बिचारे ७६।१००॥

मत्तगयंदछंद॥ आइगये यहिभाँति सबै तिहिबाग समीप जहाँ कपिराजैं। धावत आयुध हाथलियेधरु मारु पुकारत दुष्ट समाजैं। देखि तिन्हैं करि कोप कपीशचले अरराइ परे जनुगाजैं। भंजि प्रभंजनपूतसबै दलनिर्भय कूदि चढ़े तरुछाजैं ७७।१०१॥

उल्लालाछंद॥ भजे शेष पुनि अधमरेगिरत उठतबिलपत महा। जाइ सभादशकंठके धुनत शीशखल अस कहा ७८ नाथकीश अतिशय प्रबल कालकाल निश्चय कियो। जानि परत तव सकुलदल अंतक यह प्रगटत भयो ७९ सुनत उठा अकुलाय अति अछय बीरधीरज दियो। जायकरहु पितु शोच यह लघुबानर भय उरलियो ८० बहुत भांति परबोधकरि साजिकटक भटभुजप्रबल। महाबीर सन्मुख हरषि चला अमित सुखसहित खल ८१ देखि पवनसुत रिपु शयन महाबिटप करमें लियो। अक्षसहित सब भटन्ह कहँ बिनुजिव रणमहि महँकियो ८२चढेबहुरि मंदिर शिखर मनहुँ बीररस कामतन। दूत

खबरि दशमुखसभाकहाबिकलभयमगनमन८३।१०७॥

भुजंगप्रयातछंद ॥ सुनाकीश माऱ्यो अछैहू बलीहै। दही देह शोकाग्नि आसूचली है ॥ उठा आपनी भूरि सैना सजाये। कहाहै लड़ों मैं जु डंकाबजाये ८४।१०८ ॥

चलदोहा ॥ इन्द्रजीत तब आइके पितहि दीन्ह बहुज्ञान। ममआछत कस तुमलड़ो कौतुकलखोमहान८५।१०९॥

पयोधरदोहा॥दीजे आज्ञाहरषमनजाहुबधहुजिनितात। बंधन करि आनहु इहां देखों कपि करगात ८६।११०॥

चिकलदोहा ॥ साजि कटक घननाद भट सुभट संग बहुलीन्ह। शीश नाइ पितु चरण खल गवन बागमहँ कीन्ह ८७।१११ ॥

घनाछरी ॥ धायेरजनीचरपरिघ शूल शेलअसि तोमर तुपकलिये पानि धनुबान है। याकरिपु जीतभट संजुग समाज साजि आयो बाटिका बजाइ बीर बलवान है॥ देखिके अनी समूह अंजनी कुमार बेगि तरजि चले समीप बायुके समानहै। महाबीर दपटिरपटि खलखीस करैं मानो खलदल बीच काल समुहानहै ८८।११२॥ घोर घन समर करत बरिबंडकीश राक्षस कटक भटपट पट पटकत । एकन्ह पछारि एक उदर बिदारि मारि एकन्ह चरण गहि सटसट सटकत ॥ शोणित सरित धारबहत अजिर रण योगिनी जमाति खून घटघट घटकत। महाबीर अंजनी कुमारकी बिजयहोत भटन्ह के शीश बहु चट चट चटकत ८९।११३ ॥

कीरवानछंद ॥ कीन्हे कटक प्रलय लखि रावण तनय अति क्रोधित हृदयधायो करत प्रलाप। लिये आयुध

अपार इन्द्रजीत बलभार भिरि अंजनिकुमारसो कठिन करिदाप ॥ एकएकन प्रचारि हाँकिहनै ललकारि कला नटकी सम्हारि बचैंबिज्ञ आपआप । महाबीर बल-वानकरैं घोर घमसान घननाद अकुलान भयो भूरि तनताप ९०।११४ ॥

कच्छपदोहा ॥ परम प्रबल जाहिर सुभट कपि अं-जनी कुमार। मल्लयुद्ध किय छल सहित खलनहिं पा वतपार ९१।११५ ॥

कीरवानछंद ॥ हनूमान अति बलहनि मुष्टिका प्रबल गिरिधरणी बिकल खलभयो बेहवास। उठि कोप उर कीन्ह निज हारजानि लीन्ह कपितन डारिदीन्ह अति बेगनाग पास ॥ गुनि अनिल कुमार तेहि महिमा अ-पार लिय आपुबंध डारनहीं हरषहरास। महाबीर करि बंधलाइ सभा मद अंध जहाँ बैठ दशकंध सुर उर दत्तत्रास ९२।११६ ॥

रोलाछंद॥रावण सभा बिलोकि कीशनिर्भय मनआयो। दिशिप त्रशित दशबदन नीच सेवा चित लायो। मृत्यु काल यम आदि सकल रावण भयभारी। लखि प्रताप कपि तदपि यथा करि वृन्द गजारी ९३। ११७ ॥

छप्पै ॥ देखि बलीमुख बदन हृदय रावण दरकान्यो। आत्मभूत बधसुरति दुष्टकरि अति दुखमान्यो ॥ रेकपि बाग विधंसि तहीं राक्षस गणमारे। हते अछै बलवान बिपुल योधा संहारे। तोहि न डर निज जीवकर बड़ अशंक शठ लखिपरत। महाबीर भुजबल गरबत्यागहि अब खलुहै मरत ९४।११८ ॥

रोलाछंद। को पठयो किहि हेतु कहाँते लंक समाने। कहसि बेगि नत हतों मूढ़का उर अनुमाने॥ सुमिरि राम अवधेश बंदि मिथिलेश सुतापद। भक्ति नीति हित शत्रुमिलित बानी कपिवर बद ९५।११९॥

छप्पै॥ जासु चरण अज शम्भु भजत अतिशय शुभजानी। सेवत संत मुनीश महायोगी बिज्ञानी॥ मंगलमय यश जासु सदा जन शंकट हारी। बन्दित देव अदेव ब्रह्म सन्तत अबिकारी॥ निगम निरन्तर नेति कहि गावत जिहि गुण गण बिमल। प्रीतिकरत तिहुँ लोकजन लहत परमपद अति अमल ९६।१२० दशरथ राजकुमार सोइ प्रभु हमै पठायो। हरी जासु प्रिय नारि हेतुकहि तुम्हैं सुनायो॥ परममंत्र अबकहों सुनै चितधरु दशभाला। जिहि तोकहँ सबभाँतिहोइ अति लाभ बिशाला॥ देव देव श्रीरामप्रभु काल कालहूको गनै। अस बिचारि तजि हठबयर प्रीतिकरै दुहुँदिशि बनै ९७।१२१ भुक्ति मुक्ति जिहि हाथजाहि बिनुनर्क निवासा। निगमागम बिख्यात जासुपद शिवउरबासा॥ करि अनेक बहुकष्ट लहत सोपद कोउ एका। सो प्रभु तवहित प्रगट समुझु जियताजि अविवेका॥ दाबिदशन तृणदीनह्वै सादर निज नारिन सहित। सीतहिलै मिलु रामकहँ अछैराज करु कल्पशत ९८।१२२॥

पयोधरदोहा॥ बोला बचन गँभीर अति सुनि कपि बैन सक्रुद्ध। रेजड़ पोच बिचारि कह मरा चहसि खल शुद्ध ९९।१२३॥

चिकलदोहा॥ तब कपीश क्रोधित बदत रेशठ मन्द

निकाम । नीक कहत विष सो लगत फल पइहैं परि-
णाम १०० । १२४ ॥

घनाक्षरी ॥ उत्तमकुल जाइके गँवायो दिन पोचन्हि में
किये अघओघ शंक नेकु नाहिं मानीतें । घने घरघालिके
अनेरे उतपातकरि भयोनिज कर्मखल कलुष निशानी
तें ॥ रामनाम लोकपरलोक हित भूलेमूढ़ काममद माहिं
बय वृथा गुजरानीतें । महाबीर अन्तपछिताइहै अघाइ
पेट जो पैरघुनाथ पदप्रीति नाहिं आनी तें १०१ । १२५ ॥

छप्पै ॥ है तेरी अब मीच शीशपर निश्चय जाना ।
जल्पत तिहि बहुमूढ़ सुनत अतिशय खिसि आना ॥
बधहु बधहु कपि बधहु भई यहिबिधि जकताही । धाये
खल कह अनुज तात नहिं ऐसो चाही ॥ नीति बिरुद्ध
जु दूत बध आन दण्ड कछु देखिये । लावै निज प्रभु
बोलि जिहि सोमत उर अवरेखिये १०२ । १२६ ॥

घनाक्षरी ॥ गुनि उर हुकुम दियोहै दशभाल कोपि बंदर
की पूँछि में लगाओ बेगि आगि जू । आयसु सुनत र-
जनीचर समूह धाये कहत जलाओ कीश जाइ नहिं
भागि जू ॥ तूल तेल बसन सरपि भूरिलाइ सबलूम में
लपेटि खल दिये दव दागि जू । महाबीर ज्वाल अव-
लोकि निबुके कपीश चढ़े कूदि भवन बढ़े गगन लागि
जू ॥ १०३ । १२७ ॥ परोलंक खरभर मन्दिर जरत
देखि हाय हाय दनुज बिकलमन गुनहीं । धाओ धाओ
धाओ भट सलिल लिआओ बेगि अगिनि बुझाओ
एक एकन ते भनहीं ॥ बारिके परत आगि बमकि अ-
काश लागि चले भट भागि जानि प्रबल अनलहीं ।

महाबीर बन्दर अशंक बलबंक देखि अवश विचारि हाय माय बाप करहीं ॥ १०४।१२८॥ भागुभागुभागु बाप माय पूत आगि लागि मन्दिर जरत बिकराल ज्वाल धमकी। भूषण निकारु खींचुबसन पेटारु मणि रतन अपार जरै आगि जोर जमकी ॥ बाजि निबुकाउबेगि करिन्ह बचाउ अरुमहिष भगाउ भट भूरि दवदमकी। महाबीर नारि सब कहत पुकारि कियो प्रबलसों रारि असुरारि मूढ़ तमकी ॥ १०५ । १२९ ॥ रावणकी रानी गृह त्यागि के परानी करै हाहा अकुलानी हतै शीश दुहुँपानी है। हिये हहरानी अति शोचु यातुधानी मुख आव नहिं बानी धाइभूमि भहरानी है ॥ सीख सुख खानी नहिं मान्यो अभिमानी तैसी गरत गलानी पुरुषारथ बिलानी है। महाबीर ज्ञानी कपि दोष कौन आनी दनुजाधिप गुमानी तासों बैरबादिठानी है १०६। १३० बापुरो बिभीषण सुनीति कह्यो बारबार कानन किये गुमान शानभरे अंगसो। त्रिभुवन बिजय बिदित बाहुबल जासुभूलो कपि सकृत निकट भयोभंगसो॥ एही पुरुषारथ बयरुरघुबीर सनकह्यो पारपाइहै कवनिभाँति जंगसो। महाबीर दूत जासु आछत सुभट आजुहाटक नगरसबछारकरै बंगसो१०७।१३१दियोहै नियोग दशकंठ अकुलाइभट बानरपकरिबेगिअवनिपछारहू।जलद प्रलयको हुकुम देवअरि किये बरषि समूहजलअनल निवारहू॥चले बलवानगहे परिघपखानसबभनैं यातुधान धरि कपिहि संहारहू। जानु बलबंक महाबीरहै अशंक धाइ झपटि लपटि बिनुप्राण करिडारहू १०८।१३२॥

छप्पै ॥ जलपत बहुबिधि सुभट कीशऊपर चढ़िधाये। जनु कृशानु हनुमान शलभ सम सन्मुख आये ॥ यज्ञ कुंडगढ़लंक निशाचर भटहवि भूरी। श्रुवा लूम कपि हुने हांकि स्वाहा भरपूरी ॥ महाबीर लखि अति प्रबल भगे सकल हाहा भनत। छलबल कछुलाग्यो नहींहारि बिकल खल शिर धुनत १०९।१३३ प्रलय पयदभरि तोय बिपुल नभ ते जलडारे। घृत सम पावक परत ब-ढ़त दशगुण हियहारे ॥ लपट झपट अति कठिनलगत नाहिं सहि सकसारे। भभरि भगे दशभाल निकट तिन जाइ पुकारे। महाबीर लावत नगर देवदेव कोउ तन धरो। सलिल सरपि सम होत कहुँ अति अद्भुत यह लखिपरो ११०।१३४ ॥

घनाक्षरी ॥ कनक अगार जूहपिघिलि बहे समूह घृत के समान लंक तपत कराहसी। बीर बलवान पकवान काढ़ि खलदल चतुर सुआर बायुपूत भूरि साहसी। पाहुने अनल बिद्यमान सनमान युत असन जेंवावत धधक वाह वाहसी। महाबीर दनुज भजे भभरि जहाँ तहां जरी हेमनगरी बिपुल मनो लाहसी १११।१३५॥ छारकरि लंक छनही में बलबंक कपि निपट अशंक कूदि सिंधुतट आयो है। बालधी बुझाइ न्हाइश्रमते बिगतहोइ मुदित चरण जानकीके शीशनायोहै ॥ बिदा हेतु सुनत बिकल जगदम्बिकाजू भाषे तातसाँचे अब चाहत सिधायोहै। चूड़ामणि दीन्ह महाबीर हर्षि लीन्ह कीन्ह बिपुल प्रबोधहिये धीरज धरायोहै ११२।१३६॥

कामिनीमोहनछन्द ॥ मातुजी बेगिही रामजू आइहैं।

करहु बीरबर आशु। रावण खलकुल नाशु ॥ सुनि कपीशकर बैन। हरषित राजिव नैन १४५।१६९ ॥
घनाक्षरी ॥ सुनि के सुकंठ बानी बीररस सानी भूरि कोशल नरेश मंत्र भाषत अशंकाके। लीजिये कटक भालु बानर प्रचंड बेगि दीजिये नियोग महाबीर बलबंका के ॥ कीन्हहै प्रचार कपिराज कहैं कीश यूथ लेउँगो लपेटि नाथ शत्रुबल रंकाके। लखिके सहाय हियहरषे शिवैमनाय डंकादै चलेरघुबीर ओरलंकाके१४६।१७०
छप्पे ॥ डगतभूमि उच्छलत सिंधु कल मलत कोल अहि। दिगदंती चिक्करत दिशिप रघुनाथ पाहि कहि॥ अति आरत भयभीत देवगण हृदय बिचारत। डरत करत अनुमान राम प्रभु पाहि पुकारत॥ मगसमूह मंगल सगुण अवलोकत सुरभयहरण। महाबीर सागर निकट पहुँचे दलयुत बर बरण १४७।१७१ ॥
झूलना॥ डासि कुशपातमहि शेषसानंद तहँ कोशलाधीश आसीन नीके। रूप अभिराम तनश्याम अंभोज इवहरत मदकोटि कंदर्पजीके ॥ भानुसुत अंजनी सूनु अंगद बली सहित सौमित्र हरि निकट सोहैं। भालु अरुकीश सब पाइके हुक्म आनंद मन खात फलक्षुधित जोहैं १४८।१७२ ॥
चलदोहा ॥ इहां रामदल सिंधु तट राजित यहि बिधि आइ। उहां दशानन पुर सबै शंका उर अधिकाइ १४९।१७३ ॥
भुजंगप्रयात छन्द ॥ कहैं लंकबासी महाशंकछाये। सुना पार कूपार श्रीराम आये॥ लिये संगसैना बली भालु

कीशा। करैं घोरसंग्राम भारी बलीशा १५० बिनाबूझ
जाकी हरी मूढ़रानी। बड़ो बैरकीन्हे बचै क्यों गुमानी॥
पुरी शोच मंदोदरी दूतिबानी। सुनी ज्यों महाशोकमानी
डरानी १५१।१७५॥

बरवा छंद॥ निशा दशानन जब तिहि मंदिर आइ।
बोली अति मृदुबैन सुअवसर पाइ १५२ नाथ बिनय
मम सुनहु करों करजोरि। परों चरण पिय पुनि पुनि
कहउँ निहोरि १५३ हे त्रिभुवन पति उतपति थिति
भवनास। जासु हाथ अज हरि हर जाकर दास १५४
करत बिविधतप मुनिवर जिहि पद हेतु। सो प्रभुप्रगट
दशानन रघुकुल केतु १५५ जिहि समबली न द्वितिय
चराचर कोउ। तजि ममता अभिमान शरण तिहि
होउ १५६ कहहिं संत बुध वेद गुनहुँ उरबीच। हरिपद
रति बिनु भूति सकलधिक नीच १५७।१८१॥

त्रिकलदोहा॥ मुनि रंजन गंजन असुर बिबुध अभय
प्रददेव। कृपा सिंधु आरत हरण तासु चरण खलु
सेव १५८।१८२॥

कुंदलताछंद॥ अपराध सबै क्षमि हैं प्रभु तोर दया
निधि राम मिलो पियसादर। सियदेइ परो पद आरत
ह्वै हठ त्यागि कुसंकट दाबिपदातर॥ असजानि निरं-
तर छांड़ि मदादिक नाथभजो रघुनाथ कृपाकर। सुनि
के तिय बैन उठाकरि कोप चला दरबार बिचार महा-
उर १५९।१८३॥

चान्द्रायनछन्द॥ सचिव बोलि दशमाथ बचन अस
बोलई। कहहु करिय का बेगि शंक मन डोलई॥ नाथ

निरर्थक शोच लियो उर काहिको। हैं ते भोजनमोर क रोडर जाहिको १६०।१८४ सुनिमन हर्षे सभा बिभीषण आयऊ। अवसर पाइ दशानन पद शिर नायऊ॥ पूँछे ते कह बात सुचित चषचाहिसो। नीति भक्ति यश लाहु परम हित जाहिसो १६१।१८५॥

सारछंद॥ सुनो तात जौं पूँछतमोसो तौं हौं हित मत भाखौं। मुनि पुलस्ति जिमि कहिपठई सो तनक दुरावन राखौं॥ रामचंद्र सर्वेश महाप्रभु सुरनायक अविनासी। निर्गुण ब्रह्म निरंजन जानहुँ सब घट घट के बासी १६२।१८६ जो माया सबजगत नचावत जिहि अज शंभु डरावें। सो दासी रघुनाथ चरण की निशि दिन डरति सुभावें॥ काल ब्याल संसार छनकमें जो करिसकत कलेऊ। परम प्रबल रघुबीर बाहुबल अति उर डरपततेऊ १६३।१८७ तिनते द्रोह कुशल नहिं एकहु हठतजि तात बिचारो। जो चित धरो स्वहित अनुमानो मानो कहो हमारो॥ बैरप्रीति संबंध समानहि करिय वेदबुधगावें। सो बिचारि भजु राम कृपाकर तिहूँ लोक यश छावें १६४।१८८ शिविका सुभग मँगाइ जानकिहि सादर परिजन संगा। लै चलिमिलहु शरणकहि पाही करुणाकर हरिअंगा॥ अतिदयाल मृदुचित रघुनन्दन दीनबचन जो सुनिहैं। करिहैं कृपा अवशि प्रभुएकौ उर अपराध न गुनिहैं १६५।१८९ माया सरित मनोरथ जल तृष्णा तरंग अतिभारी। रागमकर बहुतर्क बिहंगम धीरज तरुहि उपारी॥ मोहशब्द चिंता अति दुस्तर तटचह पार जो

पावा। सादर प्रीति रामपद पंकज करै न आन उपावा
१६६। १६० मंत्री माल्लवान रावण के मातु पिताको
भ्राता । ताकहुँ परम नीकलागी जो कही बिभीषण
बाता॥ तात करहु जो कहत अनुज सुनि कोपकियो
उरभारी। उठिजावै उत्कर्ष शत्रु शठ भाषत युगल अ-
नारी १६७। १६१ परुषबचन सुनि गयो सभाते मा-
ल्लवान सुबिचारी । बधो चहत रघुनाथ अवशि यहि
भै तिहि मति भ्रमभारी॥ सभामौन कछु बोल न कोऊ
रावणभय असुरारी । कहै बिभीषण बहुरि पायँपरि
विनय बिविध अनुसारी १६८। १६२॥
बानर दोहा ॥ नाथ मान मद शूलप्रद देखहु हृदय
बिचारि । शम्भु सन्त श्रुति कोबिद कबिजन कहत
पुकारि १६९। १६३॥
कच्छप दोहा ॥ राम बिमुखहित शम्भु अज करि न
सकहिं दृढ़जानु। चलहु सीयलै मिलहु प्रभु कृपासिन्धु
भगवानु १७०। १६४॥
लीलावती छन्द ॥ सुनि उठा रिसाई क्रोध अघाई कह
खल मन्द अभाग सही। ममपुर बसिकै तपसिन मन
रसिकै कुलकलंक मति गति न रही॥ जो उरप्रीती तिहि
सिखव सुनीती जाइमिलै जो मनभावा। असकहि मारा
पदअनुजबिचाराबारबारगहि उरलावा १७१।१६५॥
उल्लाला छन्द ॥ हौ प्रभु जनक समान तुम हते च-
रण मोकहँ भले । पै न कुशल हरि भजन बिनु कहि
असहरि सन्मुख चले १७२। १६६ भयो बिभवकर
अंत सब रावणपुर अशकुन सदन । तजेबि भीषण

भगतजब दुर्मति अघसावककदन १७३ । १९७ ॥

रोलाछंद अनुज कहत निक बात लात खल नाहक मारा । गहिपद हित कहि तदपि नेकुनाहिं कृत अपकारा ॥ हठिकर हित ब्यवहार एक शठ करत बुराई । सन्त असन्त स्वभाव दुओौं की इहै बड़ाई १७४ चला बिभीषण शुभद सगुन मग लहत अपारा । करत मनोरथ पंथ बिबिध बिधि हृदय बिचारा । प्रण तारति हरदीन बिपति भंजन रघुनायक । होब धन्य ममजन्म लखबहरिपद सुखदायक १७५ जो शंकर उर सरसि बसत अजसेवत जाही । मुनि ध्यावत जिहि आजुभाग्य बड़ देखिहौं ताही ॥ यहि प्रकार अनुमान करत सागर यहिपारा । आये कीश बिलोकि शत्रुकर दूत बिचारा १७६।२०० ॥

छप्पै ॥ राखिताहि सुग्रीव निकट सबजाइ जोहारत । नाथ दशानन बंधु आइहरि शरण पुकारत ॥ सुनि कृपाल हँसि कहे बोलि लावहु तिहिभाई । अंगद हनूमान आदि धाये हरषाई ॥ देखि बिभीषण राम तन श्यामकाम शतकोटि सम । चाप बाण शोभित करन्हि राजत कपि चहुँदिशिपरम १७७।२०१ ॥

उल्लालाछंद ॥ मगन भयो छबि सिंधु लखि नहिं कछु कहि आवतबचन । धरिधीरज गदगद कहत पाहिपाहि भवभय हरन १७८।२०२ ॥

रायसेनछंद ॥ श्रीरघुनंदन पतित पावन । बिपतिजाल नशावन ॥ देवदेव जन मंगल हेतु । मारतंड कुलकेतु ॥ हौं जन शरण आयों दीन । आरत हरण कृपा निधि

प्रणत पियार ॥ लेहु शरण जनि तजहु बेगि श्री राम उदार १७९।२०३ ॥

चिकल दोहा ॥ करत दंडवत देखि हरि कृपा सिंधु भगवान। उठे सदय रघुबंशमणि आरत हरण सु-जान १८०।२०४ ॥

रायसेन छंद ॥ दीन बैन सुनि राम कृपाल। मृदु चित परम दयाल॥ बेगि लिये प्रभुकंठ लगाइ। अधिकप्रीति उरछाइ ॥ निरखतकीश मगन मन होत। ऐसो करुणा करहरि समको आन ॥ पूँछत कुशल पुलक तन श्री रघुबीर सुजान १८१।२०५ ॥

शोभनाछंद ॥ कहु बिभीषण बास कुठहर कुशल किहि बिधितात। बिदितहै भलमोहिं नाहिं कछु तुमहिं अनय सुहात ॥ धन्य जीवन आजु रघुपति कमल पद तव देखि। कृपा करि प्रभु शरण लीन्हो क्षेम यहि बिधि लेखि १८२।२०६ ॥

गोपालछंद ॥ जस कछु सुने सुभाव श्रवन। तिनतेघने बिलोकि नयन ॥ अबबर मांगो परम उदार। देहुभक्ति निजपद सुखसार १८३। २०७ सो कृपाल हमहूँ कहँ देव। जिहि शंकर भुशुंडि नितसेव ॥ एवमस्तु कहि रघु-कुल केतु। मांगा जलधि तोयश्रिय हेतु १८४।२०८ ॥

सुलच्छनछंद ॥ तवमन माँह इच्छानाहिं। तदपि सुजान अब यहचाहि ॥ गावत बेद बिदित सुबानि। अभिमत दानि दरशन जानि १८५।२०९ निज कर राम तिलक ललाम। किय सानन्द शोभाधाम॥ राम सुभावलखि उरमोद। कपिगण गावअधिक बिनोद १८६।२१० ॥

शोभनाछंद ॥ कहत कपि इक एकसन रघुनाथ मृदु चित तात। शत्रुबर्ग ते आइ निशचर बहुरि रावण भ्रात॥ तर्क किय कपिनाथ बरुनाहिं तदपि प्रभुउर माँह। नेकु त्याग बुलाइ सादर शरण लिय गहि बाँह १८७।२११ पूँछि तिहिकी कुशल भाषत अतिहि आरत बैन। भक्तिदै नृप कीन्ह ताकहँ मुदित राजिव नैन॥ शिवा सुनु कपि कटक अतिआनन्द सिंधु अन्हात।राम चन्द्र कृपालता लखि मुदित बानर गात १८८। २१२ नामते भवसिंधु सोखत जासु सो प्रभु राम। जनबड़ाई देनके हित परम कौतुक धाम ॥ सुनि बिभीषण बैन सादर जाइ जल निधि तीर। पंथ मांगत बिनय करि सुनि चकित ह्वै मतिधीर १८९।२१३ ॥

मत्तगयंदछंद ॥ आइ बिभीषण राम समीप तबै दशकंधर दूत पठायो। देखत श्री रघुवीर सुभाव प्रफुल्लित ह्वै मनही मनगायो॥ भूलि दुरावगयो तिनको बपुबानरते निज आतम पायो। शत्रु सिपाह लखे कपि बृन्द चहूँ दिशिसो उठि मारनधायो १९०।२१४॥

चंचरीछंद ॥ बाँधि ताकहँ कीश सब सुग्रीव पास लिआयऊ। फेरि चारोओर दल के अंगभंग सुनायऊ॥ मारि लातन्ह काटि दांतन्ह नख शरीर बिदारहीं। कहै कोउ श्रुति नासिका हर सुनतदीन पुकारहीं१९१।२१५ जो हमारी नाक हरतिहि शपथ श्री रघुनाथकी। पाहि हनुमत त्राहि लछिमन शरण सीता नाथकी॥ दीनबच सुनि लषण कीश बुलाइ बेगि छड़ायऊ। पत्रिका कर देइ आहि पुनि बैन बिशद सुनायऊ १९२। २१६

दीजियो दशमाथ हाथन बाँचि हितमत मानई। आनि केवलबात यहनहिं और कछु उरठानई॥ कोटि शंकर बिष्णु अजनहिं राम रूठे राखिहैं। राखिबे की कौनकउ नहिं बात सूधे भाखि हैं १९३। २१७ जानि अस उर सत्य सादर सीयलै मिलु रामको। करहि लोचन सुफल निर्भय त्यागि मद दुख धामको॥ नतरु निश्चय काल खल तव शीशऊपर डोलई। बचैगो नहिं भाँति केहू गर्व जो उरमोलई १९४। २१८॥

कच्छप दोहा॥ नाइ शीश प्रभुपद कमल शुक गवनो पुरलंक। जात सराहत मृदुलता कपि बल सहज अशंक १९५। २१९॥

सार छन्द॥ शीशनाइ दशभाल चरण शुक ठाढ़ जोरि कर आगे। कहत दशानन बहुत चकितचित काहे कछू न बागे॥ गे तपसी फिरि सुनत पराक्रम मेरो सहज सुरारी। कुम्भकरण घननाद वीरकी भै उरभय अति भारी १९६। २२० भाषहि साँच नाथ जौं पूँछेहु तौं फुर सबरो भाखो। जोरिपाणि प्रभु विनयकरों सुनि सोइ बिचार उरराखो॥ गयो जबहिं तव भ्रात तिलक तिहि राम कृपानिधि कीन्हा। सचिव सखा कहि सादर बहुविधि अभय बाह हरि दीन्हा १९७। २२१ रावण दूत जानि मोहिं कीशन्ह दण्डादिये अति भारी। काटत श्रवण नाक आरतहौं तब हरि शरण पुकारी॥ अति कृपाल आरतिहर रघुपति देखि दया उरआई। निकट बुलाइ भालु बानरतें मोकहँ दिये छड़ाई १९८। २२२ परम प्रबल शतकोटि

कालकहँ करिसक हरि संहारा। समरधीर तद्यपि करु-णानिधि मृदुचित कृपा अगारा॥ एक एक बलवान कीशदल त्रिभुवन जीतनवारे। पीसहिं रदकरि कोपकहँ इमि सहजबली भटभारे १९९। २२३ सोखहु सिन्धु सहित झखब्यालन पकरि त्रिकूट उपारो। सीतहि आनि बहुरि रावणगढ़ पुर सागरमहँ डारो॥ लंकादीन्ह बिभीषणको हरि ताते हृदय डरावैं। नतरु करैं फुर नाथ न अचरज जो कछु कहत सुभावैं २००। २२४ पदुम अठारह यूथपती हैं सुना श्रवण अस स्वामी। एक एक के संग असंख्यन सुभट बली अति नामी॥ तिनसों बैरकिये दशकन्धर एकहु कुशल न जानो। सादर जनकसुता लै चलिये मिलहु कहो मम मानो २०१। २२५ बोला दशमुख खीझि हृदय शठ शत्रु पक्ष बहुगावै। मोहिं सम बली कौन त्रिभुवन जिहि शक्रहु शीश नवावै॥ मृषा कहसि सुनि समयजानि शुक काढ़ि पत्रिका दीन्ही। लैकर बाम सचिव सन रावण तुरत बचावै लीन्ही २०२। २२६॥

पयोधरदोहा॥ राम शिलीमुख गरुड़शठ तैं कुल संयुत नाग। जानि बूझिजनि कालसों करै मूढ़ अनु राग २०३। २२७॥

हंसदोहा॥ सुर नायक रघुबंशमणि कृपासिंधु श्रीराम। सीतालै मिलु आइनत जाइ कालकेधाम२०४।२२८॥

किरीटछन्द॥ जन्मलिये जगमें जबते अपकार अपार किये लघुतातर। मोह बबूरन्हि सेइभले तजिके कल्प-द्रुम राम सुखाकर। आइभजै ममतातजि मानपरत्र

महामिटिहै भवसांकर । कालबली मुखबाइधरे खलु बारकरै जनि बार बराबर २०५। २२६ ॥

शोभनाछन्द ॥ सुनत उरभय मानिबाहिर सबहि कहत बुझाइ। अट्टहास न मनहुँ खल हिय शङ्क निपटदुराइ ॥ बड़ोतपसी धरनिमें पड़िगहत करन्हि अकास । छोट तिहिते अधिक जिहिको सुनहुँ बाग बिलास २०६।२३०

चलदोहा ॥ कह शुक पुनि पुनि पायँ परि नाथ न होइ अलीक । लिखी पत्रिका आइ जो तिहि उर जानहु ठीक २०७। २३१ ॥

कुण्डलता छंद ॥ अतिशय बलवान महारणधीर जितै जगको असबीर धुरन्धर । तजि के ममता समता उर आनि गुनो रघुनाथहि ब्रह्म निरंतर ॥ असजानि बिदेह सुता सँगलै चलि बेगिमिलो हरिसों दशकंधर । करुणानिधि चूक सबै क्षमि हैं अति सन्तत दीनदयाल कृपाकर २०८। २३२ ॥

अनुफल छंद ॥ रावण अति खिसिआना । कोप महा उरआना ॥ उठिकरि मारेसि लाता । शठ मिलु जिहि गुणगाता २०९। २३३ ॥

चिकल दोहा ॥ चला सप्रेम बिचार करि प्रभु शरणागत पाल । अवशि मोहिं अपनाइ हैं बलनिधि बाहु बिशाल २१०। २३४ ॥

करछप दोहा ॥ करत मनोरथ बिबिधाबिधि प्रभुपहिं निशिचर आइ। प्रेमसहित बिनती कियो गयो भक्ति बरपाइ २११। २३५ ॥

भुजंगप्रयातछंद ॥ गयो बंदिसो रामको धामपायो । कृपा

सिंधु लीला तिहूँलोक गायो ॥ न ऐसो कहूँ देव दाया निवासी। खलै मुक्तिदीन्ही हरी जक्तफांसी २१२।२३६॥

सारछंद ॥ गिरिजा यह मुनि रहा पूर्ब नेवते मुनिकुंभजकाहीं। छलकरि कोऊ बिप्र मांस दीन्हेसि मृग आमिष माहीं॥ भोजन कहँ अगस्त मुनि आये परसेसि सब पकवाना। ध्यानधरे ऋषिजानि मरम तब महा कोपउर आना २१३।२३७ रेशठ निशिचर करम घोर करि होइ निशाचर जाई। द्विज अरुगऊ मांस भक्षी खल संतत अधम अघाई॥ दशरथ भवन ब्रह्म अवतरिहैं जबतें दशरन पइहैं। शापोद्धार होय तबतेरो पुनि निज लोकहि जइहै २१४।२३८॥

पयोधरदोहा॥ ऐसो खल अधमाधमहिं मुक्ति दीन्ह श्रीराम। भजहि निरंतर ताहि मन त्यागि मोह दुख धाम २१५।२३९॥

बरवाछंद॥ दिवस तीनि रघुनंदन बिनती कीन्ह। जलधि नमानै तब प्रभु असउर लीन्ह २१६ लावहु लछिमन पावकशर हरषाइ। सोखौं सिंधुसलिल अबइहै उपाइ २१७ सूम कृपिनि सनदान कहेक्यौ गाइ। क्रोधवंत चित समता कहिय बुझाइ २१८ कामिहि परतिय मातु प्रबोधहिकोइ। लोभिहि परधन मृतिका किमिकर होइ २१९ असकहि रघुवर धनुपर बाणचढ़ाइ। ताने श्रवणप्रयंत जलधि अकुलाइ २२० रतनथार भरि भेंट धरि बिप्र शरीर। आयो शरण पाहि कह श्री रघुबीर २२१।२४५॥

चिकलदोहा॥ बारबार बिनती करत पुनि पुनि शीश

नवाइ। कहत बचन आरत खड़ो करुणा हृदय अ-
घाइ २२२।२४६ ॥

अनुफलछंद ॥ धरणी सलिल अकाशा। ये जड़ सहज
प्रकाशा ॥ जिहि प्रभुआज्ञा जैसी। पालतहैं सब तैसी
२२३।२४७ जौं प्रभु बहुरि नशावैतौका मोर बशावै॥
आज्ञा मानि सुखैहौं। गौरवकछू न पैहौं २२४।२४८ ॥

सारछंद ॥ जो तुमरे मनभाव कहो करिहौं उपाय सोइ
ताता। हँसिकह कृपासिंधु रघुनंदन सुररंजनजनत्राता॥
नाथ नीलनल दुहुँ भाइन्हको ऋषि आशिष लरिकाई।
भयो तरिहि जल उपल दारुइव दीनबंधु रघुराई २२५
आयसु करहु सेतु रचना हित बिनुश्रम होइहि काजा।
आनहिं कीश महीधर जगके यहि बिधि कोशलराजा॥
बाँधहिं सेतु महूँ निज बूत सहाय करब रघुबीरा। यहि
शर उत्तरतीर हतौखल सुनि हरिदलेअभीरा २२६।२५०

चलदोहा॥देखि प्रताप प्रफुल्लित सागर मनअति चाव।
हृदय सराहत रामबल शीलसनेहसुभाव २२७।२५१॥

पयोधरदोहा ॥ मांगि भक्तिबर बिनय करि पद परि-
गा निज भौन। कृपासिंधु सो उरधरे भाख्यो सागर
जौन २२८।२५२॥

शुभगीताछंद ॥ सहस शारद शेष कोटिन कल्पलग जो
गावहीं। होइ कोटिन बदनतौ तेउतदपि पारनपावहीं॥
जाहि सुनि निगमादिक नेति कहि नित गावई। ताहि
नरकबि क्षुद्रमति कहि पार किहि बिधि पावई २२९।
२५३ सुफल बानी होन हितजन रामयश नित गाव
हीं। कहत सुनत विषाद नाशहि कामना नरपावहीं॥

जेसप्रेम सनेहयुत रघुनाथ यश निन गाइहैं। शिवाशं- कर साखिते बांछित सकल फलपाइहैं २३०। २५४॥

इतिश्रीछंदरामायणेसुन्दरकांडेमहाबीर
दासविरचितंसम्पूर्णम् शुभम्॥

अथ लंककांडप्रारम्भः॥

चलदोहा॥ सेतु बांधि कपि भालुदल उतरे सागरपार। गिरि सुबेल सुंदर शिषरनिवसे रामउदार १। २५५॥

हंसदोहा॥ सचिव मंत्र स्वीकार करि बोले बालि कु- मार। जाहुसभादशभालके अंगद गुणआगार २। २५६॥

चिकलदोहा॥ करेहु बतकही सोइ सकल कारज सम हित तासु। बूझि हृदय गति पोचभल आवहु करहु प्रकासु ३। २५७॥

मच्छदोहा॥ चरण बंदि सकुचाइ उर बहुबिधि बि- नय सुनाइ। उठे मुदित युवराज कपि चले सबहि शिर नाइ ४। २५८॥

घनाक्षरी॥ दशमुख पुरखरभर पस्यो नारिनर ब्याकुल बिचारत कहाधों अब होइगो। आयो एकबार बाटिका अनीक राक्षसालि नगर बिलास क्षणहीं में सब खोइ गो॥ सोई कपि क्रुद्धचढ़ो धावत आवत हाय अक्षआ- दि बीरन प्रत्यक्ष जो बिगोइगो। महाबीर लंक लोग भयते बिकल युवराज बाज देखत लवासो भूमि सोइ गो ५। २५९ भागे पीठ परतडरत थरथर अंग एक एक सनकछु कहो नाहिं पारहीं। गयो दरबार बीर बाँकुरो

अशंक भय रावण दिशिप सुर भृकुटि निहारहीं। दूत बोलि खबरि जनाइ सभामध्य ज्योंहीं किये परबेश लोग खड़े कै जोहारहीं। महाबीर कुपित बिलोकि दशभाल यह ईरषा अनल उरजरोपीर भारहीं ६।२६० कहैकौन कीश अहौं दूत जगदीश जाकी तीयघर आइ हँसि बोले युवराजहैं। भगिनी कुरूप करी सो तौन कहत काहे मानमद त्यागु बड़ो दुखको समाजहैं॥ मित्रता जनककी विचारि तोहि आयों इहां सुनैमानु बचन सकल सुखसाज हैं। महाबीर सीयलै मिलहु दीनभाव भले आरतिहरणअति कोशलधिराज हैं ७।२६१॥

त्रिकलदोहा॥ भंजन खल रंजन सुजन आरत हरण सुभाव। ब्रह्मादिक सुरसिद्ध मुनि श्रुति पुराण जिहि गाव ८।२६२॥

छप्पै॥ धन्य प्रथमनर देहदेह महँभूसुर धनि अति। भूसुर में बिद्वान बेदबिद सदा सरलमति॥ तिनमहँ धन्य बिरक्त सरस बैष्णव तिनते बहु। बैष्णव महँ धनि संत अचंचल चित्त जाहिरहु॥ संतहु महँधनिहैं सोई राम परायण एकरस। महाबीर नाहिं अन्यगति हरि मूरति जिहि हृदयबस ९।२६३॥

कच्छपदोहा॥ सेवत संत मुनीश नित अज निर्गुण भगवंत। सचराचर नायक अकल अबिगत अलख अनंत १०।२६४॥

घनाक्षरी सोई रघुनाथ दशमाथ जियगांचि देखुकालहूको काल देव देव कोशलेश हैं। बयर बिरोध काह तिनते किये भलोजु सेवत सादर जाहि गिरिजा महेश

हैं॥ मानतजि तासों मिलिबोनि कोई राजनीति हृदय बिचारु निगमागम प्रवेश हैं। महाबीर रावण सुनत परजरो उर अहो बुद्धि धाम कीश मोहिं उपदेशहै ११।२६५॥

छप्पै॥ बकबादी जड़जंतु नीति उपदेशत मोहीं। बोलै बचन सँभारि मृत्युनत आई तोहीं॥ मोसमको बलवान जितेउँ नरनाग बिबुधबल। तासन मनुज बखान बदनपर करत कीशखल॥ जनककौन कहु नाम अपिकरी मित्रता मोहिंसन। महाबीर कपि बालिकहँ श्रवण सुनत सकुचानमन १२।२६६॥

उल्लालाछंद॥ दुष्ट बचन युवराज सुनि लख्यो काल बश रावनो। रामभगत परहित निरत परदुख दोषन शावनो १३।२६७निजकुल देखु बिचारि जियशुद्धलोक बिख्यात तिहुँ। पुलस्त्यादि यश बिमलशशि होहिदाग किमिते हिमहुँ १४।२६८॥

मत्तगयंदछंद॥ दान दयारत धर्मसदा हरिभक्त निरंतर शील सुहाये। बेद पुराणनुकूल चलैं महिमा जिनकी सद्ग्रंथन्हि गाये॥ उत्तमता मरयाद यथा बिधना रचिके सबभाँति बनाये। जौं परतीति रहै इतनी कुलधर्म बिलाप कुसतन्ति जाये १५। २६९ धर्म ध्वजा फहरै नितहीं सतसंगति सज्जन आदर पाये। लोग पुनीत सराहतुहैं शुभमारग नीतिरहे लयलाये॥ कीरतिभूति सुमंगल खानि सदासबके प्रिय लक्षणभाये। रामपरायणहै तबहूँ कुलधर्म बिलाप कुसंततिजाये१६।२७०॥

उल्लालाछंद॥ करत आचरण जानि सोइ दशकंध

सुनु मानताजि। कुलकलंक कतहोइ करु जनमसुफल रघुबीर भजि १७।२७१ सुनि क्रोधित दशवदन खल बोलाखर्ब अजानकपि। ममभुज बल बिक्रम अतुल जित्यौं कालतैं बिदनअपि १८।२७२॥

मत्तगयंदछंद॥ मृत्युमहा जगभक्षक जो अरु काल कराल सुरेश कुबेरू। जेदिशिपाल नवैं भयभीत तमीचर राजक नाम सुनेरू॥ जादशमाथ महीतल में सचराचर जीव निरंतर चेरू। ताबल अंत बड़ो मनुजें करि भाषत सेरहि सद्य सुमेरू १९।२७३॥

चलदोहा॥पिता राजपद जो दलोताहि भजैकपिपोच। होइएकवग करुसमर भल परिणामनशोच२०।२७४॥

छप्पै॥ कपट परुष बचसुनत कीश उरकोपे भारी। रेमति मंद गवाँर नीचखल कुमति सुरारी॥ हितमत बिषसम लगत बादि बकवादि चलावै॥ त्रिभुवनपति शिवसेब्यराम तेहिनरकहिगावै॥ममहित नहिं तबखल समुझु उभौलोक सुखपाइहै। रामबयर नतफल यथा भलपाछे पछताइहै २१।२७५॥

मच्छदोहा॥ रावण धिक तो तोहिं कहँ हरि पदकमल बिहाइ। कुल कुठार पांवर अधम तनिकत हृदय लजाइ २२।२७६॥

छप्पै॥ धिक सरूप बिनु शील शील धिक मानन राखै। मान सुधिक बिनु नम्रनम्र धिक कटुकजुभाखै॥ कटुक कहिय धिक सरस सरस धिक धर्मन लीन्होधर्म सुधिक बिनु दयादया धिक दानन कीन्हे॥ दानमान सब भाँति धिक जहँ न रामपद रति लसै। महाबीर

छल कपट तजिजौन साँच हिरदैबसै २३। २७७॥

चिकलदोहा॥ मानकि खल दशकंठ अपि कालबिबश मदभार। तस तिहि श्रीहत करि बहुरि बोले बालिकुमार २४।२७८॥

मच्छदोहा। रामरोष पावक प्रबलशलभ भयसि मति मंद। धिक भुजबल अभिमान तवअस कहि चले अनंद २५।२७९॥

चलदोहा॥ समाचार कहि चरणपरि भोर कीश हरषाइ। चले सुआयसु पाइ जनु कालबली समुदाइ २६।२८०॥

पयोधर दोहा॥ अकंपनादिक खल सुभट अंगदादि कपि बीर। जैजै करि सन्मुख भिरे महाबीर रणधीर २७। २८१॥

कीरवानछंद॥ इतभालु कपिठट्ट उतराक्षस सुभट्ट रण अजिरप्रजुट्ट भूरिदल दुहुँ ओर। लिये पाणि शूलशेल चले करिनटखेल भईअति बगमेल भिरे बीर बरजोर॥ एक एकन्ह झपटि धरि भाजत रपटिकीश डाटत दपटि भयो युद्ध घनघोर। महाबीर बलवान बल पौरुष महान खल दलत सुजानहोत लंकपुर शोर२८।२८२॥ गहि भट्टन्ह सुभट्ट एक एकन दपट्टअति कुपित लपट्ट दुहुँ दल बलवान। रणबांकुरे प्रचंडबल बिक्रम अखंड कीश भालुबरिबंड किये क्रोध भरुहान॥ धरि बाहन झटक चट महि में पटक सबराक्षस कटक बीच परी घमसान। महाबीर बरजोर करैं युद्धघन घोर मचोलंक रशोर दशकंठ अकुलान २९।२८३ निशिचर केरहार

सुनि क्रोधित अपार इन्द्रजीत बलभार चलो सामुह
रिसाइ। जोति रथबर बाजि गति बायु देखिलाजि अति
बेग दलसाजि बीर दुंदुभी बजाइ॥ गढ़ बाहिर पयान
चट कियो बलवान संग भूरि यातुधान कपि दलबीच
आइ। महाबीर कीश भालुबल पौरुष बिशाल जनु
अगनित काल सद्यगये निअराइ ३०।२८४ धरि रा-
क्षस पटकि कोटि कोटिन्ह सटकि दिये सिंधु में झटकि
खाये झख अरुब्याल। भुजशीश दंततोरि काहूगहि
झकझोरि अंग मलतमरोरि किये निशचर बेहाल॥
एक क्षणके मझार बीर अंजनीकुमार अरि दले बेशु-
मार धरिरूप बिकराल। महाबीर बलपाइ धाई कपि
समुदाइ अतिहिय हरषाइ परिबेष जनुकाल ३१।२८५
शेल असि झनकार इत कपि किलकार बल बिक्रम
अपार कीश भालु बलवान। अति कोप दृगलाल एक
एकते कराल तन मेरुसे बिशाल जनुछुये आसमान॥
रिपु अवनि पछारि वृन्द दानव सँहारि धरि उदरबि-
दारि नाद करत महान। महाबीर कपिदल कियेराक्षस
बिकल भयबश हल चलभजे भूरि यातुधान३२।२८६
रिपु कटक भगाइ डंका जीतक बजाइ दिन अंत रुख
पाइ आये रघुबरपास। भोरभये बलवान लंक एकही
उड़ानगये बलके निधानकरैं अरि उपहास॥ दशमुख
अकुलाइ बोलि सुभट पठाइ चली खलसमुदाइ तजि
जीवनकी आश। महाबीर कपि क्रुद्ध भालुकरैं घोरयुद्ध
रनमद में बिरुद्ध लड़ैं अवनि अकाश ३३।२८७॥
छप्पै॥ झपटि दपटि बलवान हनै जै राम पुकारैं।

छीजहिं निश्चरवृन्द बिबिध छलकरि उरहारैं॥ शेष महीधर वीर पाकरिपु जीत खेलावैं। कोपि कठिन धनु तानि तरलतर बिशिख चलावैं॥लखि संकट रावण तनय शूल जलज भवदत्तहन। महाबीर महिमा समुझि गिरे अवनि तल सहसफन ३४।२८८॥

शोभनाछंद॥ देवराज अराति समभट भूरि मिलिएक बार। चहत पुरलै जानउठ किमि ईश पुहुमि अधार॥ अंजनीसुत देखि क्रोधित प्रबल बेग निवास। आइ अरिन्ह पछारि कौतुकलै चले प्रभुपास ३५।२८९॥

चिकलदोहा॥ बैदबास अरि नगर सुनि पवनतनय तहँ जाइ। सह निकेत लाये तुरत कही सुपेंच लगाइ ३६।२९०॥

सोरठा॥योजन चौंसठि लक्ष संजीवनि गिरिद्रोणपर। लावै जो भटदक्ष नाहिंत लक्ष्मण भोरनहिं३७।२९१॥

चिकलदोहा॥ साँझरीछ कपि कटक जहँ आई कृपा निधान। अनुज दशालखि रामप्रभु बिलपत समय समान ३८।२९२॥

छप्पे॥ हा सौमित्रि सुजान परम प्रिय प्राणअधारा। जननि जनक गुरुज्ञाति सकल पुरजनहिं पिआरा॥ नगरलोग के सौंह बदन किमिकरिहौं भाई। युवति लागिहौं मंद सहोदर अनुज गँवाई॥ विविध भाँतिस करुण वचन सहजशोच मोचन कहत। महाबीर अंजनि सुवन सुनि बिलखे बोलन चहत ३९।२९३ प्रभु बिषाद किहि हेतु करतसो मोहिं बताइय। तव प्रताप बलनाथ दासकरि सद्य देखाइय॥ प्रभु समर्थ सुरपाल

मनुज इव बिलपत भारी। सुनि सुनि उरसकुचाउँदेव आरत भयहारी॥ जो नियोग कछु करहु अब चरण कमल शिरनाइके। महाबीर दुर्गम सुगमकरों नाथरुख पाइके ४०। २६४ कहिय निशेश निचोरि चैल जिमि अमी चुआवों। नागलोक पीयूष कुंडमहि सथल लिआवों॥ मारतंड पथराहु रोंकि रबि उगनन पावैं।कंटक काल सँहारि मृत्युको नाम मिटावैं॥ द्रोणाचल संजीवनी कहा दूरढिग मानिये। महाबीर आयसु करहुआइ निकट निज जानिये ४१।२६५॥

कवित्त॥ दामिनि दमक जौलों पलकै नढक तौलों कोशलाधिराज द्रोण लाइहों छनक में। नियोग नाथ लैसो सुमन वेग सैसो प्रमाण करों कैसो अगम जोखलक में॥ हुकुम पाइ छलके निकट द्रोणचलके गयेबिशाल बलके सुधीर बीरहकमें। महाबीर गिरि कर लिये फिरे प्रबलतर तुरंत आइ पहुँचे बलीमुख कटकमें ४२। २६६॥

कच्छप दोहा॥ वैद यतन किय उठतभे लषण महा बलवान। अति प्रसन्न रघुबर बदन कपिजै कृपा निधान ४३।२६७॥

छप्पै॥ बहुरि आइ रणभूमि प्रात घननादहिं मार्यो। कोशलेश घटकरण सुभट आदिक संहार्यो॥ युद्धरामदश माथ शेष कहि पारन पावैं॥बिथकहिं शिवब्रह्मादि ताहि नर कवि किमि गावैं॥ देव देव रघुबंशमणिहत्यौ मूढ़ खलदल सहित। महावीर रणविजय यश पाइ सीय हरषे अमित ४४। २६८॥ सुरगण जयजय करत

सुमन नभते बरषावत। नारदादि मुनिब्रन्द पुलकतन हरि गुणगावत॥ कपिगण हृदय प्रमोद पुलक अतिशय सुखपावैं। अनुज सीय सँग राम कुशललखि पद शिरनावैं॥ रावण उर मणिमाल लखि अति अमोल धनपति चकित। महावीर सोइ प्रभुनिकट लाइ बिभीषण देन हित ४५। २९९॥

पयोधर दोहा॥ कृपासिन्धु प्रभु शीलगृह जामवन्त तन देखि। पूँछत उचित सलाह जो कह ऋक्षेश विशेखि ४६। ३००॥

छप्पै॥ भूधर बाजि सपक्ष उदधि महँ जब मधुनीरा। इन्द्र युगल चष बहुरि विष्णुकर पिंग शरीरा॥ विधि शर आनन रह्यो शम्भुसित कंठ कृपाला। मदन कलेवर सहित पयोधि अमंथ दयाला॥ ये सबहीं जानौ भले इन नयनन्ह आगे भयो। महावीर नहिं लख्यो कहुँ दईवस्तु जो पुनि लयो ४७। ३०१ सुनि कृपालु हँसि माल बिभीषण करमें दीन्हों। सेवक प्रिय सनमान राम बहुविधि तिहि कीन्हों॥ पुष्पकयान सजाइ हरष युत सुरभय भंजन। चले कृपाकर अवधभक्त आरत जनरंजन॥ भरत मातु गुरु मिलन सुख कहत शेष सकुचाइ है। महावीर नर ताहि सो कवनि भाँति कर गाइ है ४८। ३०२॥

इतिश्रीछन्दरामायणे लंकाकाण्डे महावीरदास विरचितं सम्पूर्णम्॥

अथउत्तरकाण्डप्रारम्भः ॥

सुन्दरीछन्द ॥ मिलिभेंटि यथाबिधि लोगसबै करुणा-
कर दीनदयाल गुसांई। मुनि आयसुलै अभिषेक भयो
अति नीक मनोहर सींव सुहाई ॥ असकौन कहौंउपमा
जिहिकी जगदीश समान कहूँ जगजाई। अति आ-
नँद औध सुखी नरनारि सुमंगल पुंज प्रतीत अ-
घाई १।३०३ ॥

मत्तगयंदछंद ॥ दुर्लभहू सिधि होत सबै शुभकीरति
भूति अनूप बिराजैं। लेश कलेश नहीं सपने सुखसो-
वत साधुसभा छबिछाजैं ॥ बिस्मय पावतु हैं सुरराज
त्रिभौ अवलोकि महाउरलाजैं। गावत शेष महेशसदा
जिहिऊपर रामकृपाल निवाजैं २।३०४ ॥

चकोरछंद ॥ औधपुरी नरनारि भनै धनि रामकृपाकर
स्वामि अशंक। रावणसो बलवान दले अपि मेटतभे
सबको दुखडंक ॥ दीन कपीश सखा पददै हरि कीन्ह
बिभीषण भूपति लंक। तेजतथा यश हैं प्रभुकी शशि
सूर मतंग परस्परअंक ३।३०५ ॥

घनाक्षरी ॥ लाभ कवन संगति गुणीजनकी पाइये जू
दुःख अति दुर्जन मिलाप पहिचानिये। निपुणता सोई
धर्ममाहँ रतिराजै उरशूर तेईजासु इन्द्रीबश मानिये ॥
युवती वहीहै अनुकूल पति वरतै जौन रामसों सनेह
ताहि सज्जन बखानिये। महाबीर यहिते अधिकनहिं
दूजी हानिपाइ नरदेह हरिभक्ति बिसरानिये ४।३०६
प्रीति बिनु कुटुँब प्रतीति बिन मित्रजैसे नीति बिनभूप
वो दयाके बिनदानहै। नीर बिन सरिता अधीर बरबीर

तैसे पवन बिनबेग ज्यौंन ताल बिनतानहै ॥ बानीबिन सुकबिन दानीबिन धनीछबि पानी बिन मुक्ता अमानी बिनज्ञानहै। बिमल बिराग महाबीर त्यौंन त्याग बिन रामभक्ति हीन सर्ब लघुता महान है ५।३०७ मोहमद माते इतराते दिनरैन मूढ़ वृथा बकबाद करि अवसर गुजारी है। अल्प पुरुषारथ बखानै भीम करण ऐसो दंभ परिपूर अहमीति उरभारी है॥ रावणसे बिजयी बिलायगये पलमाँह पोच भल करणी जुसंगमें सिधारी है। येरे अभिमानी गति अंतकी बिचारै नेकु ओचट कराल काल क्षणमें सँहारीहै६।३०८ जौंपै रघुबीर पद सेवैछल छांड़िमन परम सुपास सदा शांति चित लावै-गो। अतिशय अगाध भवसागर बिषादतरि बिनही प्रयास सारीभय बिनशावैगो॥ नीके सुर असुर प्रसन्न भलो कहै लोग सुंदर सुजान कबिगुण गण गावैगो॥ महावीर कोशलेंद्र सन्मुख श्रीहोत शुभ बिमल सुयश तिहुं लोकमहँ छावैगो ७। ३०९ बड़े अधिकार कोहै भूषण सुजनताई शूरताई भूषण निरभिमान गाई है। भूषण विवेकको सुशांति शास्त्रपढ़बेको बिनय बिशाल बित्तदानतें लोनाई है॥ तपको है भूषण अक्रोध प्रभु-ताको क्षमाधर्म शुचि भूषण निर्छलता सुहाई है। म-हाबीर संत निगमागम बखानत हैं शोभा नरदेह नेह राम अधिकाई है ८। ३१० कोप करें बिधिहू सुरेशहू कृतांत आदि दशो दिग्पाल अरुभूमिपति भारेजू। अस्त्र शस्त्रसाथही चहैसो झरलावें किन ताहिन कले-श लेश ठीकदै बिचारेजू। जाके रघुबीर से सहायक

सकल भांति तनमन प्राणजिन रामही पैवारेजू। महा-
बीर औरके रिसाने बिगरैगी कहा जौपे सियरामरक्ष
संतत तिह्वारेजू ६।३११॥

मत्तगयंदछंद॥ क्या करिहैं नररूठि कछू जिहि हैं रघु-
नंदन एक सहाई। औरन की तब छोह कहा जिहि
ऊपर गेहैं वेई रिसिआई॥ जानिहिये अपने यह ठीक
रहैं जन निर्भय शोच गवाँई। रामकृपालु कृपा चहिये
बिन रामकृपा सुकहा बनिआई १०।३१२ सन्तत हैं
परमारथ में रतहेतु बिना नरश्रेष्ठ कहावैं॥ तुल्यगनै
परकाज तथा निज मध्यम ताकहँ सन्त बतावैं। त्यों
निजहेतु दलै हित और कहैं कविते अति नीच सु-
भावैं। जो बिनहेतु दलै परमारथ कौनअहैं वह जानि
न जावैं ११।३१३ योग विराग कछू कलि में नहिं
साधन सिद्ध उपाय बनैना। कल्मष ग्रस्त भयो भरपूर
महा मनमूढ़ विचार करैना॥ लोकहुको परलोकहुको
हरिनाम अधार गवाँर भजैना। संतन्ह के परुपाँय
सदा भजुसार इहै उपकार तजैना १२।३१४ मित्रन
ऊपर घातकरै परतीति दिखाइ दगा करहैजू। औरन
के अपकार विषे रत सन्तत त्यों ममतातरहैजू॥
राम पदाम्बुज में नहिं प्रीति भईजु सुभाय निरन्तरहै
जू। भाइ रही पिशुना इसदा तिनके पितु मातहि अंत
रहैजू १३।३१५ द्यूतसभा गणिका मदमासनि
हेतुबड़े व्ययमान बनैआ। औरनके अपकार तथा वि-
षयाअति छूत भँड़ार लुटैआ॥ चाहु कुराहनि धाम
नशै अपि नेकुहिये नहिं शोचकरैआ। पै सतपंथ सदा

हितहै तिहि देतबनै नहिं एक रुपैञ्जा १४। ३१६॥

चन्द्रकला दुर्मिल सवैया ॥ सिय रामकनाम जपैं निशि बासर रामहिंको गुण गावतु हैं। भरपूर निरन्तर प्रेम पगे हरिभक्तिहि में मन लावतु हैं॥ निजकर्म करैं जस वेदबदै हित औंर सदा चित ध्यावतुहैं। सबसन्त पुराणकहैं तिनको दुहुं लोकनमें यशछावतुहैं १५। ३१७

अघ औगुण भरि प्रशंसिहिये मन राग समेत सदा सनिहै। तिहुँकाल निरर्थक अप्रिय बैन हितौ करि जो प्रियतूँ भनिहै॥ जत चाल सुचाल कुचालसही सबभाँति विपर्यय जो फनिहै। यदि संतत नेह न राम विषे कलिकष्ट कलेवर सो बनिहै १६। ३१८॥

मदिरा सवैया॥ प्रीति पुनीत सदा हरिके पदकी नितही चित भावतु है। आपसहैं बरु संकट कोटिन पै परदुःख नशावतु है॥ संतत सत्य विचार क्षमा सुदया करिके छबि पावतुहै। वेदपुराण कहै तिनको दुहुँ लोकन में यश छावतु है १७। ३१९॥

सुन्दरी सवैया॥ विष वेलि फरै फलदिव्यअमीरवि सौंह निशा नहिं क्योंहु नशाई। थितिहोइ महीधर नाक निरन्तर औ लघुव्याल खगेशहि खाई॥ मृग के जलते बरुजाइ तृषा शशि शीतसुभाव तजै सुनुभाई। अस होइ न बिस्मय जानिय पै बिनु रामकृपा न सुसंगति पाई १८। ३२०॥

चन्द्रकला दुर्मिल सवैया॥ अति कूर कुसंगति लोलुपता रत मोहमहा भव शालहिरे। नरदेह पुनीत सराहत देव लहे निज काजहि घालहिरे॥ सुखसिन्धु समीप

विहाइअघी खलुआइ फँसे जगजालहिरे।कलिनाहिंन
औरअधारकछूभजुकोशलपालकृपालहिरे १९। ३२१॥
घनाक्षरी॥ रामराम सीताराम राघौ रामराम रामराम
रामराम राम जीहजौन जपिहै। धनद सुरेशपुरजाइ
के बसैगी तहूँ दुःखभय पीड़ित दुसह तापतपिहै॥ गा-
वत महेश निगमागम मुनीश शेष देवतरु सयसे बि-
शेष एषुअपिहै। महाबीर सेवै तिहि छांड़िछल प्रीति
लाइ अचल सुधाम एक रामनाम थपिहै २०।३२२॥
मत्तगयंदछंद॥ संमत वेद पुराण लिये हरि भक्तिसमा-
गमकी समताकी। शुद्ध बिचार बिराग कहै भवसंयम
नेम सदा दृढ़ताकी॥ धर्म निरूपण पक्ष अभेद निरं-
तरलोक हितू करताकी। सत्य सरूप सुनीति गिराकबि
उन्नतियों करिये कबिताकी २१।३२३॥
चकोरसवैया॥ रामकथा वरणी अतिअद्भुत श्रीतुलसी
कबि दिव्यमयंक। त्योंहिंजु कृष्णलला गुणसूर किये
सुनि नाशत मोहअतंक॥ गावत ध्यावत मंगल मूल
लहैनहिं जानहुते मतिरंक। शोभितहै कबिता सरिद्धो
शशिसूर मतंग परस्पर अंक २२।३२४॥
घनाक्षरी॥ बिपति बिनाशी जमगनहिं यमुनासी मुक्ति
हेतु जनुकासी दीप्ति तरनी प्रभासी है। बिबुध पगासी
शंभु मानस निवासी संत कंजमन बासी अति मधुर
सुधासी है॥ शीतशशि चंद्रिकासी सर्ब मंगलकी रासी
महाबीर हित खासी कलिकलुष प्रनासी है। सुमति
बिलासी जग पालक उमासी काव्य तुलसी प्रकासी
रामभक्ति सरितासीहै २३।३२५ पूरणपुराण निगमा-

गम बिचारजामैं समता सुभाव सींवसंत सुखदानी है। कोबिद गुणज्ञतज्ञ भूषण सुकंठमाल शोभा अभिराम धाम हिये ठहरानी है॥ गावत सुनत परमानंद सुभाय लाहु रीझत रमेशवेश लोक पददानी है। मोहरजनी को भानु करसी बिनाशै बेगि ऐसी शुचिबाणी कबि तुलसी बखानीहै २४।३२६॥ वृन्दवृन्द पापिनको छोरि अघओघनते लेत बात ठौरठौर चरचा चलतिहै। सारे भूमंडल में फैली बितान ऐसी धर्मकी दुकान मानपुण्य पधरतिहै॥ पोतपटु जीवनको महाभवसागरसों तरिबे की वानिकानि मूल तें दहति है। महाबीर तुलसी की कबिता परे पुनीत रामयश बारि लिये सरिता बहतिहै २५।३२७॥

अथ हनुमानबिनय॥

छप्पै॥ सुन्दर शुभगुण अयनमयन शतकोटि लजावन। स्वर्णबर्ण तनतेज भानु दारिद तमदावन। हरि जनहित दृढ़वानि कानि सहमूल बिनाशन॥ दुरितदोष दुख दहतदेत बिश्रामपरममन। भुजउदंड परचंडबल बिश्वबिदित कपिनाथ कर।महाबीर पदबंदि जिहिपूजत उरअभिलाष वर १।२६।३२८॥

घनाक्षरी॥ केशरी किशोर बीरबांकुरो बिदित बिश्व विक्रम अखंड किये सिंधु एकफंकको। शोधि दशकंठ पुर जानकी प्रबोधि दियो धीर बलवान कपि आतम अशंकको॥ रावणपरम प्रिय प्राणके समान बागध्वंसि दये दानव हृदयदुख डंकको। महाबीर लूममें अगिनि

का प्रवेश जानि ख्यालही कीश प्रबल क्षारकीन्ह लंक को २।२७।३२९ महिमा अगमपार पावन निगमकहि बीर हनुमान सीय रामके दुलारेजू । मेघनाद शक्तिते बिकल भयो लषण सजीवनी सबेगलाइ प्राण रखवारे जू ॥ भरत बिरह सिंधु बूड़त सहाय किये हरि सोधदेइ शोक संकट निवारेजू । महाबीर मोहमन पीड़त विविध भांति अंजनीकुमार क्योंनदलि दूरिडारेजू३।२८।३३० रामके दुलारे बीरलषण पियारे सबसंत अरबृन्द कीश भानुको उदोत है । दारिद दुसह दोष सकुल दनुजदल भंजन प्रभंजन सुवनजू निसोत है ॥ भुजबल प्रबल बखानत बिबुध वृन्द महिमा अपारजगजलधि सुपोत है । महाबीर पीरसरि बूड़त कृपानिधान मेरा दुखहरत बिलंब बाड़ि होतहै ४।२९।३३१ रह्यो है सुकंठदीन जानत जहान सब हीनता छँड़ाई रघुनाथको मिलाइ के । रावण अनुजकी सहायता किये कपीश दिये राज कोश लंक डंकहि बजाइके ॥ शरण आयेहैं जवन उदर खलाये पेखि भयोहै कृपालु बेगि दया सरसाइके । महाबीर काम क्रोध लोभते बिकल होत बेगि बलवान हरु शोक समुदाइके ५।३०।३३२ करुणानिधान बलवान हनुमान प्रभु चतुर सुजान हेतु जानत हियेकी है । मनक्रम बचन प्रपंच पापरत सदा शुभ आचरण सपनेहू कियेकी है ॥ मेरो करतबपोच हेरियेन कपिनाथ लीजिय शरणजन लाल साजियेकी है । महावीर दीनपै दयाल हूजिये कृपाल हरहु दुसहपीर सासति बियेकी है ६।३१।३३३ गयो वेद पढ़न दिनेशके निकट कपि

रथ अग्रभागगति उलटीचलतभे।देवनरनागबलबिपुल भनत सबरहे चकचौंधि खगनाथहू हलतभे॥ अमित पराक्रम बिलोकि कीशनाथ तब बड़े बड़े बीर हिये धीर न धरतभे।महाबीरदासआश रावरोदुखितहोतसुरशोक हरदल दानवदलतभे ७।३२।३३४ लोभमोह कोहबीच सन्तत निरत अति अवगुण अपार कहे शेषकेन चुकि है। कपट कुचालि करतूतिको अहौं निकेत देखिके स-मूह पाप अघी वृन्द भुकि है॥ जौपै मेरे करम बिचा-रिये कृपानिधान तौकिहौं शरणहोब मनबेग रुकि है। महाबीर बिरद सँभार ओर आपनी ते जाको बल प्रबल बिलोकि दोष दुकि है ८।३३।३३५ कायर कपूत कूर कलुष प्रपंचरत किये सपनेहूँ नहिं भल क-रतूतिहों। मत्सर बिकार आचरत प्रीति मानिभूरि अव-गुण उपाय के करैआ मजबूतिहों॥ मेरे अघ अमित कहेन जाहिं कीशनाथ कपट सुबेषकरि करतब धूतिहौं। महाबीर एतेहूपै शोच न खरोसो मोहिं रावरे भरोसते निशोच होइ सूतिहौं ९।३४।३३६ कठिन अगम काज सुगम कपीश हाथ साँच बिरदावली विदित बेद गावनो। परम प्रचण्ड बीरबण्ड बीरबाँकुरो प्रबल अ-क्षकदन दनुज दलदावनो॥ एतेबड़े साहसी समर्थ के अछतआजु देतहै दुसह दुखदारिदभयावनो। महाबीर जनकी सँभार बेगिकरै नाथ होतहै बिकल भूरि बिपति नशावनो १०।३५।३३७॥

मत्तगयंदछंद॥ गावत बेद पुराण सबै करुणाकरहौ हनुमान गुसांई। श्रीपति के प्रिय प्राणअहौ हरिभक्त

सहायक बानि सदाई ॥ दीन दयाल दुखी लखिके
हरिये भवसंकटकी बिपुलाई । देहु इहै वरदान कृपाकरि
राम पदाम्बुज प्रीति सुहाई ११।३६।३३८ काहुहि सं-
पतिको मदहै अरु काहुहिहै बलको अभिमाना । कोउ
कुटुम्बक गर्बकरै कइचाटक नाटक माहिं सयाना ॥ का-
हुहि रूपक दंभघनो नहिं मानत संतन वेद पुराना ॥
मोहित एकतुहीं हनुमान दयाकर बेगिहरो दुखनाना॥
१२।३७।३३९ रावणसीयहर्यो जबहीं रघुनन्दन दुःख
कियो अतिभारो । जाइलखे महिजा तबहीं हतिके दल
दानव लंक प्रजारो ॥ आइ कह्यो रघुनायक सों सजि
वेगिबली मुखधारि अपारो। संजुग भूमि निशाचर नाश
कियो जिहि तीनहुँ लोक सुखारो १३।३८।३४०कौनसु
काज अहै जगमें कपि नायक जोन सधै तुमपाहीं । ल-
क्ष्मणशक्तिलगीजबहीं रघुनाथबिथाति कियो मनमाहीं॥
लाइसजीवन शोकहर्यो त्रयलोकपराक्रमसे कउनाहीं ।
दास दुराश निशाचरि को बलवंत हतै दुख देत स-
दाहीं १४।३९।३४१ जोरिक पानिकरौं बिनती बरदान
इहै करुणा करदीजे । राम सुप्रीतमकी प्रियभक्ति निरं-
तर मग्नरहों स्वइकीजे ॥ सेवकसेव्य सुभाव हिये रह-
बास सदामद मत्सरछीजे । कूर कपूत अहौं यदिपै जग
पावनबानि सँभार करीजे १५।४०।३४२॥

घनाक्षरी ॥ अंजनी कुमारपद सेइसुर नरमुनि पावत
अभीष्ट फलगावत निगमअस । सन्त जन मंडली च-
कोर चंद्रमासे आप प्रिय रघुनाथकी समान दूसरो न
तस ॥ बीर बिरदावली बिदित त्रिभुवनमांह शतशेष

शारदा न गा इपार पावयस। महाबीर सांकर मिटाव न दया निधान देहुहरि भक्ति राम मूरति हृदयबस १६। ४१।३४३ बुधिबलहीन मन निपट मलीन गुणज्ञानहूँ बिहीन आचरण कुसमाजको। बेचिबेचि नाम तवउदर भरत सदा मिलि है न मोंसे दुनी दूजो दगाबाजको॥ बिरद सँभार अंजनी कुमारकीजे बेगि साहिब सुजान तोसे उमर दराजको। महाबीर दासहित करिबी उपाय सोइ जाते उरबास होइ सीय रघुराजको १७।४२।३४४ कीरति विभूति जगमान्यता बड़ाई जतकीश राजइन की समाज नहिं चाहिये। लोक परलोक हित रामकरुणा निधान प्रीति पदपंकज सनेमते निबाहिये॥ भारी एक पूजबेकी लालसा रहति नाथ विदित तुम्हैं तदपि प्रगट जनाइये। महाबीर जीवन सुफलकरु बेगि नाथ राम रंगरँगे हरि दास कहवाइये १८।४३। ३४५ राम नाम प्रीति परतीति सब भाँति जिहि सुलभ सकल रिधिसिधि बिनुश्रमहीं। मर्कटाधिराज सोपि सहज सुभायबश कहे किमिजाहिं अति अगम निगमहीं॥ साहिब सुजान करुणा अगारदीन हितबानि उरधारक निरन्तरानियमहीं। महाबीर जोरिपानिबिनयकरत नाथ रामपद प्रीति देहु जनम जनमहीं १९।४४।३४६ बीर हनुमान यश गावत मुनीन्द्र कवि परम उदार अति करुणा अगारसो। दुष्टदल दानव विभंजन सहजसूर सन्तत करनहार सेवक सँभारसो। केशरी किशोर रण रोर बरजोर अति महिमा निगमगाइ पावत न पारसो॥ महाबीर दासचह शरणहरण भय कपिनाथ कहा मन

करत बिचारसो २०।४५।३४७ सन्तत बिरोध मति
दुखित किये जुमोहिं आपद हरणबेगि संकट नशाइये
नीतिया अनीति मम तुमते छपी है नाहिं करुणा नि-
धान भारीभीरते बचाइये ॥ बढेखल लावक दुखददल
जोरि बहुकरि मनरोष बाजरूप दरशाइये । महाबीर
नाथ हाथ सबरी उपायकर जनकी सँभारजाते राम
यशगाइये २१।४६।३४८ बीर बरजोर केशरी किशोर
रामदूत खल मंडली सरोज दहन तुषारहो । रातिचर
घोर निशि हेतु मारतंड जोति सहजप्रकाश चित को-
मल उदारहो ॥ मोहि जो सतावत निरपराध कीशनाथ
विज्ञ आप जानहुँ सकल निरुआरहो । महाबीर सा-
हिब समर्थ बूझिये कृपाल देहु फलताहि प्रभुनीति के
अगारहो २२।४७।३४९ भूत प्रेत मंडल पिशाचयो-
गिनी जमाति दुसह दुखद ग्रह बामता देखावई। करम
कराल कालशत्रु करिजोर बढ़े ब्याधि बहुभाँति बल
घालिन रहावई ॥ अंजनी कुमारबीर पावतपराई पीर
बिपति बिमोचन निगम असगावई । महाबीर दीनकी
बनैगी बलि आपही सों अभय कराहिं जन इष्टफल
पावई २३।४८।३५० सुमिरत नाम तव भूत प्रेत दूरि
होत भूरिभाव बढ़त लखन रामपद में । यंत्रमंत्र टोट-
कादि दाबिन सकतकोउ अरिदलि मलिजात महाभव
गदमें ॥ खुलत सुभागके पटलआति बेगिहीं सोभूलिन
धरतपाउँ कामक्रोध मदमें ।महाबीर स्वामिअनुकूलता
लहतजन रहतअनंद सदा बाघहूके रदमें २४।४९
३५१ बारबार बिनय सुनाऊँ परिपाय नाथआरत बि

... पूणम्॥

लोकि दयादान सरसाइये। मुनिवर सकल जपतलय लाइसदा त्यागि दुरबासना बिषय समुदाइये॥ चाहत सुलभ सोइ जानतन योगजप जाहि करि दीनबंधु प्रभुको रिझाइये। महाबीर आपनी बिरद ओर करै नाथ राम रघुनायक शरण ज्योंहौंपाइये२५।५०।३५२

मत्तगयंदछंद॥ दीन दयाल अहो प्रभुजों चितकोमल शील उदारन थेरे। बेगि दयाकरकै करुणा दुखद्वन्द हरै गन शोक हलोरे। श्रीकपिनायकजू बिनती जन आरतदीन करै करजोरे। प्रीति सदा पदपंकज में रघुनन्दन के उपजै अति मोरे २६।५१।३५३ पाण्डव कौरव भूरि अनीभय भारत पारथ केतु बिराज्यो। मग्न भई भयते अरिसेन जबै हरिनायक सिंहसगाज्यो॥ कीन पराजय शत्रुतुहीं कपिवीर महाबलधीर धुराज्यो। मोरि दुराशदलै प्रभु बेगि लहै जन रामसनेह समाज्यो २७।५२।३५४ रामपरायण हैं जनजे तिनके प्रिय सर्वश प्राण गुसाई। आरत दीननकी हितबानि निरंतर छोह कृपा अधिकाई। मोहि जुहारत देरभई दिनदानि जुकाहि बिलम्ब लगाई॥ बेगि द्रवो हरिभक्ति हमैं हनुमान महा प्रभुहोहु सहाई २८।५३।३५५ कहै हरि को बिनु जीवन जानहु सूकरसे धिक ज्ञानगुमानी। रामसनामहि प्रीति नहीं जिनके उरते मति रंक बखानी॥ है पशुपूँछि विषानबिना अघओघ निकेत बिलोकत हानी। मातु युवा तन भूरुहको भय चोख कुठार कलंक निशानी २९।५४।३५६॥

कुन्दलता सवैया॥ कबते यहदीन दुवार खड़ो करि टेर

जुहारतहै रघुनन्दन । करु नेकु ग़रीब नेवाजकृपा प्रभुहा सबलायक दोष विभंजन॥ नहिं दूसर ठाउँ समाउँ जहाँ किमि जाइकरों कहुँ औरहि बंदन । मम एकअधारतुहीं करुणाकर बेगि दयाकर द्वन्द निकंदन ३०।५५।३५७॥

घनाक्षरी ॥ नाम रामको प्रभाव भनतमुनींद्र कबिदीनाहित देवतरु कामना सुधरिहैं।कलुष निबिड़तम भंजन दिनेश सम गंजन बिकार गणदास भीर हरिहैं॥रामइति अक्षर समूह मंत्रराजजपि भूरिभाग होतजन मोदमन भरिहैं। महाबीरप्रेम लयलाइजपु रामनाम कबहूंकृपाल कृपादृष्टि तेनिहरिहैं ३१।५६।३५८ सौरज सुशीलताईं विद्या चतुराई कछु जानत न कबिताई भेदभाव रसके । तेरई अधार अंजनीकुमार मोको नाथ निपट मलीनहौं तो जाहिर कुयश के ॥ ताते तोहिं बारबार बिनय सुनावै जन स्वामी सरबज्ञतूँ करैआ सरबशके । महाबीर दीन हित नामनातते नेवाजु रामभक्ति देहिजाहि भीरु भव खसके ३२।५७।३५९ ताहिको बिलोकि सक तमकि तिरीछीकोर जाहिर केशरी किशोर दया सरशावई ॥ जाको बालकेलि उर समुझि उदयभानु डरत सुभट भूरि धीरता गँवावई ।थपिहै कपीश जिन्हैं उथपै बहुरि कौन महिमा त्रिबुधवृन्द बन्धन छड़ावई । महाबीर तुमते कहा न होइगो कृपाल रामपद नेह सुख मूलजन पावई ३३।५८।३६०॥

दोहा ॥ वोनइससै वोनचाशको सम्बत अगहन मास । द्वितिया शशि दिन शुक्लपख भयो ग्रन्थ परकास १।५९।३६१ ॥इतिश्री हनुमान्विनय सम्पूर्णम् ॥

छन्दरामायण।

वोनइस सै पञ्चाश शुभ सम्बत कार्त्तिक मास।
असितपक्षकीद्वादशी रबिदिनग्रंथप्रकास १९५०।३६२॥
इतिश्री छन्दरामायणे उत्तरकाण्डे महाबीरदास
विरचितं सम्पूर्णम्॥

कवित्त॥ पूरब महेशजू को बास आनन्दबन काशी शुभधाम शर योजन लसत है। कोसशर दक्षिणपै देवनदी विंधिक्षेत्र आदि शक्ति चण्डी खोजि तारत अपत है॥पश्चिम प्रयाग बेनीमाधव दिगदूनकोस मज्जन कियेते अघ ओघता दहतहै। औधपुरी उत्तर पचाश कोस ताके मधि कोंढ महाबीरदास ब्राह्मण बसतहै १॥
